चन्दामामा
अप्रैल १९६२
60

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन)
प्राइवेट लि.
कलकत्ता
(डाबर: बालामृत)
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
पुष्टई में
बच्चों को
सुलभ हैं

कुशल गृहिणियाँ
जानती हैं
कि केवल
टिनोपाल

टिनोपाल

'मेरी
अपनी
सेविंग्ज बैंक
पास बुक!...'

..."मुझे तो बचानेमें ज्यादा आनन्द है —
इसीलिये तो मेरा सेविंग्ज बैंक खाता
दी बैंक औफ इन्डिया लि. में है। अपना
सब रुपया मैं इसी खाते में जमा करता हूं!
यह बचत क्यूं! — जी, यही तो मेरा खेल है!"

विशेष सुविधायें

प्रतिवर्ष १०० चेक तक आप भी, चाहे जितनी
रकम बगैर सूचना निकाल सकते हैं — और
आपकी बचत पर प्रतिवर्ष ३% चक्रवृद्धि ब्याज
भी मिलता रहेगा।

दी बैंक औफ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

क्या अब भी कुछ करना है ?

जी हां। अब भी बहुत कुछ करना है। देश भर में अपूर्व एकता और असीम उत्साह की जो लहर फैली है, अपना लक्ष्य प्राप्त करने की जो दृढ़ता और प्रबल भावना जागृत हुई है, उसमें हमारी उदासीनता अथवा ढिलाई के कारण कोई कमी न आए, इसका हमें पक्का इंतजाम करना है। राष्ट्र के प्रति समर्पण, कर्तव्य-निष्ठा तथा अनुशासन से काम करने के दृढ़ निश्चय को हमें दोहराना है।

- अनावश्यक खर्च बंद करें, ठाट-बाट छोड़ दें।
- कुछ भी बरबाद न करें—दफ्तर हो या घर, कहीं भी, किसी भी समय।
- अपने काम पर डटे रहें, फुर्ती और कुशलता से पूरा किया गया हर काम राष्ट्र को अधिक सबल बनाता है।
- अपना सोना राष्ट्र की सेवा में अर्पित करें, ढिलाई छोड़ें और मुस्तैदी से काम में जुटे रहें।

चौकस रहें

–राष्ट्र की तैयारी में हाथ बटायें।

ब्रिटेनिया
ग्लैक्सो

चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

पाठकों से हमें निरन्तर पत्र मिलते रहते हैं। उनमें से कई हम "पाठकों के मत" में प्रकाशित भी करते हैं।

कई पत्र प्रशंसात्मक होते हैं और कई आलोचनात्मक। परन्तु ये पत्र हमारे लिए हमेशा पथ-प्रदर्शक रहे हैं और रहेंगे।

यही नहीं, इस प्रकार सम्पादक और पाठक के सम्बन्ध भी बने रहते हैं। यह "चन्दामामा" जैसे वर्धमान पत्रिका के लिए आवश्यक भी है। हम पाठकों के पत्रों का स्वागत करते हैं। उनके सुझावों का स्वागत करते हैं।

वर्ष: १७ अप्रैल १९६६ अंक: ८

भारत का इतिहास

घूर मोहम्मद का कोई उत्तराधिकारी न था।

उसके प्रतिनिधियों ने अपने अपने प्रान्तों में अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। ताजुद्दीन इल्दिज गजनी का सुल्तान बन गया। भारत के प्रतिनिधियों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को अपना बादशाह समझा। इन प्रतिनिधियों में बंगाल का प्रतिनिधि इख्तियारुद्दीन और मुल्तान का प्रतिनिधि नासिरुद्दीन कबाचा थे। यह देख ताजुद्दीन को कुतुबुद्दीन पर ईर्ष्या हुई। उसने पंजाब पर कब्ज़ा करने के लिए युद्ध किया। कुतुबुद्दीन ने उसे हराया। गजनी से भगा दिया। चालीस रोज़ तक उसने गजनी पर अत्याचार किये। पर गजनी के लोग उसके अत्याचार न सह सके और उन्होंने चुपचाप ताजुद्दीन को बुला भेजा। अचानक उसके आने पर कुतुबुद्दीन को गजनी से भागना पड़ा।

१२१० नवम्बर में, कुतुबुद्दीन पोलो खेलता खेलता घोड़े पर से गिरा और लाहौर में मर गया। उसने चार वर्ष ही राज्य किया था। वह अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध था।

कुतुबुद्दीन के मर जाने के बाद कहीं अराजकता न फैल जाये, यह सोच लाहौर में ही अमीर और मालिकों ने आराम बक्श को अपना सुल्तान चुना। और उसको आराम शा नाम दिया। परन्तु वह समर्थ न था। तुर्कों ने उसे गद्दी पर से उतार दिया और उसकी जगह मालिक शम्सुद्दीन इल्तमश को गद्दी पर बिठाया।

इल्तमश तुर्किस्तान का था। बड़ा खूबसूरत था। बुद्धिमन्द और अनुभवी था। इसलिए कुतुबुद्दीन जब दिल्ली का प्रतिनिधि

था, तभी उसने उसके लिए बड़ा दाम देकर गुलाम के तौर पर खरीदा था। वहाँ धीमे धीमे एक एक ओहदे से बढ़ता गया। आखिर वह बदायूँ का गवर्नर नियुक्त हुआ। यही नहीं, उसने कुतुबुद्दीन की लड़की से शादी भी कर ली।

१२१० नहीं तो १२११ गद्दी पर आते ही इल्तमश को बड़ी बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। नासिरुद्दीन ने मुल्तान में न केवल अपनी स्वतन्त्रता ही घोषित की, बल्कि उसने पंजाब पर भी अपनी नज़र डाली। गज़नी में ताजुद्दीन इस फ़िक्र में था कि गूर मोहम्मद का जीता हुआ सारा इलाका वह अपने कब्ज़े में करना चाहता था। खिल्जी वंश का अलीमर्दान ने, जिसको १२०६ में गवर्नर नियुक्त किया गया था, अलाउद्दीन नाम रखकर, अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया था। ग्वालियर, रणथम्भोर आराम शा के समय में ही फिर हिन्दुओं के हाथ आ गये थे। बाकी हिन्दू राजा भी अपना राज्य पाने के लिए तैयारियाँ कर रहे थे। यही नहीं, दिल्ली में ही कुछ अमीरों को इल्तमश का शासन पसन्द न था।

इल्तमश इन सब समस्याओं का एक एक करके सामना करता जा रहा था। दिल्ली के समीप, जूद मैदान में उसने बगावत करनेवाले अमीरों को हराया। १२१६ जनवरी में उसने ताजुद्दीन को, १२१७ में नासिरुद्दीन को हराया। परन्तु १२२८ फरवरी तक नासिरुद्दीन का पूर्णतः पतन नहीं हुआ। १२२९ में बगदाद के खलीफा अलमुस्तन्सिर बिल्ला ने इल्तमश को मान्यता दी, उसे "सुल्तान आज़म" का खिताब भी दिया।

१२२६ में रणथम्भोर फिर इल्तमश के आधीन हुआ। १२३०–३१ में बंगाल

में खिलजी भी वश में कर लिए गये। १२३२, ग्वालियर का शासक मंगल देव भी पराजित कर दिया गया। १२३४, भिलसा और उज्जयनी पर भी कब्जा कर लिया। उज्जयनी से विक्रमादित्य की प्रतिमा दिल्ली पहुँचाई गई। इल्तमश ने २६ साल शासन किया। २९ अप्रैल, १२३६ को उसकी दिल्ली में मृत्यु हो गई।

इल्तमश के राज्य में ही मंगोल पहिले पहल सिन्धु नदी के तट तक आये। उनका सरदार चन्गेज़ खान था। इसका असली नाम तेमुचीन था। इसका जन्म ११५५ में हुआ। छुटपन में इसको बड़े कष्ट झेलने पड़े। होते होते वह बड़ा सरदार बन गया। मध्य एशिया के असभ्य जातियों की मदद से इसने एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। परन्तु मंगोलों ने दिल्ली के सुल्तान को तंग नहीं किया। वे वहीं से वापिस चले गये।

१२९० तक दिल्ली पर तुर्की सुल्तानों का शासन रहा। उनमें इल्तमश बड़ा समर्थ और प्रसिद्ध था। उसने कलाओं का भी पोषण किया। उसकी कीर्ति के शाश्वत चिह्न, कुतुब मीनार का निर्माण १२३१-३२ में पूर्ण हुआ। यह गलत है कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसका यह नाम रखा था। बगदाद से आये हुए ख्वाजा कुतुबुद्दीन दिल्ली में रहने लगा था। उसके गौरव में इल्तमश ने कुतुब मीनार बनवाई थी। क्योंकि उसको सुल्तान कुतुबुद्दीन और सुल्तान मुअज़्ज़ुद्दीन पर आदर था इसलिए उसने इनके नाम इसपर खुदवा दिये। इसे धर्म पर भी बड़ा अभिमान था। इसने एक बड़ी मस्जिद भी बनवाई थी।

दास्य-विमुक्ति
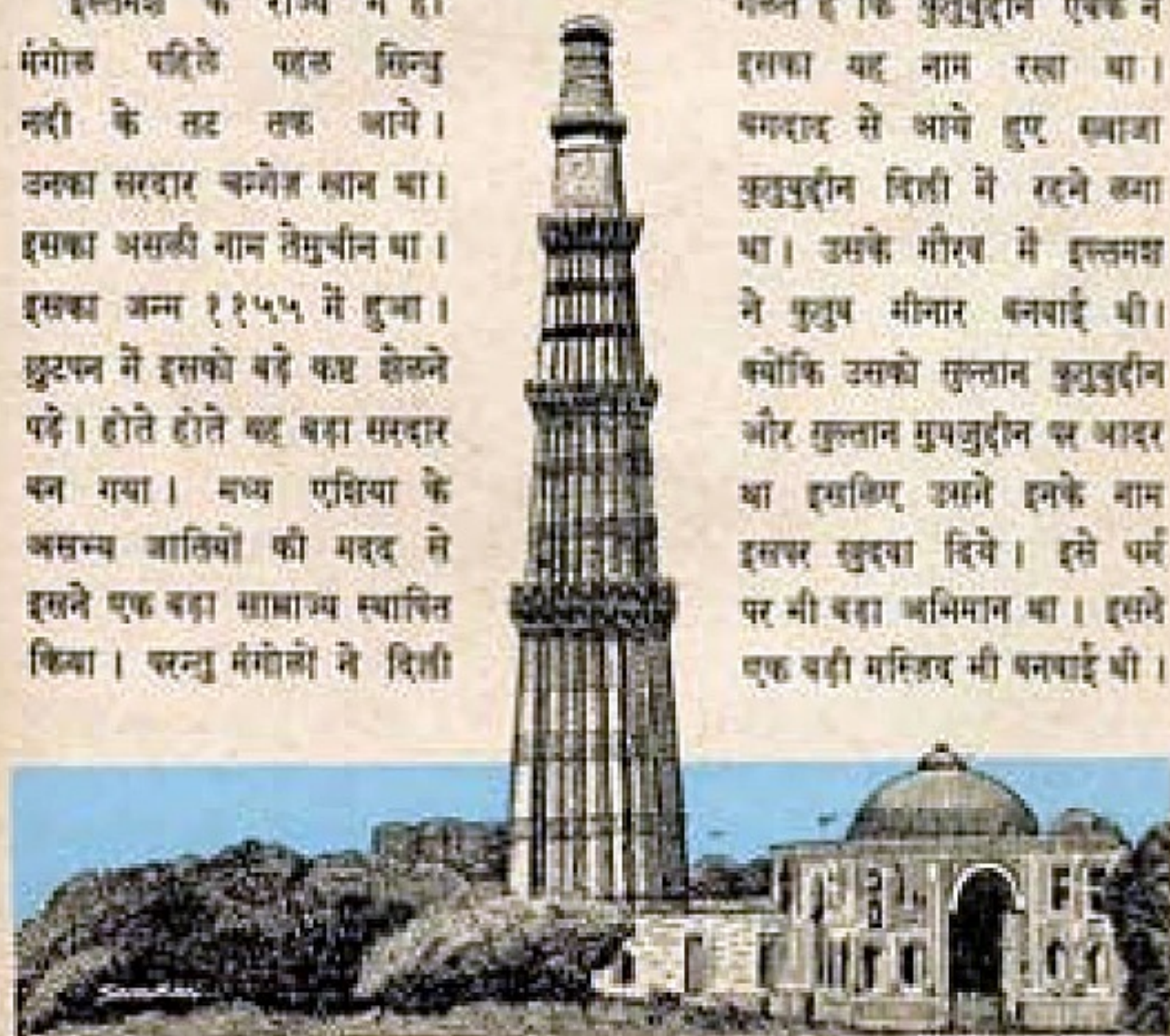
अपने घर आ कद्रू ने तब
सभी सुतों को पास बुलाया,
कहने उनसे लगी कि—"बेटो!
मुझपर है संकट घिर आया।

शेषनाग यदि रहता घर में
तो होती मैं नहीं निराश,
इस सौ बेटों की माता हो
मैं हतभागी आज उदास!"

इतना कहकर लगी बहाने
आँसू की वह धार,
हुए पुत्र सब विचलित उनको
उमड़ा माँ पर प्यार।

एक साथ ही बोले सब वे—
"माँ, तुम यों मत बनो अधीर,
कहो खोलकर कैसा है दुख
क्यों है उमड़ी मन की पीर!

नहीं 'शेष भैया' तो क्या है
हम सब तो हैं ही तैयार,
मिटा न पाए माँ का दुख तो
सुत के जीवन को धिक्कार!"

यह सुनकर कद्रू तब बोली—
"विनता मेरी सौत,
लगता है, उसके ही कारण
आएगी अब मौत।

मैं उसके ही साथ आज थी
गयी घूमने सागर-तट पर,
वहाँ एक घोड़े को देखा
था सफ़ेद अति सुन्दर।

'घोड़ा कितना श्वेत मनोरम'
कहने विनता लगी वहीं,
मैंने इस पर कहा कि 'पहले
ज़रा पूँछ तो देख सही।

"श्वेत न घोड़ा वह बिलकुल है
पूंछ देख लो काली है,
बढ़ा-चढ़ाकर तू है कहती
तेरी बात निराली है।'

मेरी बातें सुनकर विनता
लगी वहीं पर खूब झगड़ने,
'श्वेत पूंछ भी है घोड़े की'
लगी बार-बार यह ही कहने।

आखिर शर्त लगा बैठी मैं
जान नहीं परिणाम,
हारी जो दासी बन उसके
करने होंगे काम!"

कहा वासुकी ने तब माँ से—
"माँ, यह क्या तुमने कर डाला?
उच्चैःश्रवा नहीं था घोड़ा
नहीं एक भी रोआँ काला!"

कद्रू बोली बहुत कुपित हो—
"करो बंद बकवास,
चाह रहे तुम कभी न पूरे
मेरी कोई आस।

करना है तो यही करो
कहती हूँ मैं आज,
लिपट पूंछ से उस घोड़े की
रख लो माँ की लाज!"

कहा वासुकी ने फिर उनसे—
"लेकिन यह तो ठीक नहीं,
पकड़ो लड़कर राह धर्म की
यों अधर्म की सीख नहीं!"

कद्रू के गुस्से का फिर तो
बढ़ा और भी पारा—
"बात काटता अरे निकम्मा!
मैंने व्यर्थ दुलारा!

नहीं मानते मेरी आज्ञा
देती हूँ अब शाप,
जनमेजय के नागयज्ञ में
जलना सब चुपचाप !"

माँ का सुनकर शाप भुजंगम
उठे अचानक काँप,
एक पुत्र 'कर्कोटक' आया
आगे अपने आप ।

बोला वह—"माता तुम अब यों
होओ नहीं अधीर,
जन्म तुम्हीं ने दिया—न कैसे
हरूँ तुम्हारी पीर !

जलने दूँगा तुम्हें न दासी
विनता ही जाएगी हार,
दासी वही बने तुम्हारी
कर दूँगा ऐसी चमत्कार !"

और दूसरे दिन कर्कोटक
निकला हो तैयार,
कद्रू वहीं मुदित मन-ही-मन
अपलक रही निहार ।

पहुँच गया कर्कोटक तत्क्षण
जब सागर के तट के पास,
देखा उसने, शांत भाव से
चरते उस घोड़े को घास ।

धीरे से कर्कोटक ने तब
पकड़ी जा घोड़े की पूँछ,
काली दिखने लगी दूर से
उजली थी जो पूँछ।

उसी समय विनता को लेकर
कद्रू निकली करने सैर,
करती आयी थी विनता से
आज पुराना बैर।

दिखा दूर से ही घोड़े को
बोली कद्रू—"देख अरी,
पूँछ नहीं घोड़े की उजली
उसपर काली रेख भरी!"

विनता की दृष्टि गयी तो
बोली बंद हुई,
सदा विहँसती मुख की आभा
पल में मंद हुई।

कुटिल हँसी हँस कद्रू ने तब
नमक जले पर छिड़का—
"बहुत दिनों में आकर तुमने
कल था मुझको झिड़का!

दासी मेरी हुई आज से
भूली तेरी टेढ़ी चाल,
मान आज क्या बैठी तू ही
चली मुझे भी देने मात!"

देख पराजय विनता अपनी
दुख से हुई अधीर,
कद्रू के पाँवों पर गिर कर
आँखों में भर नीर—

बोली, "दीदी, दया करो तुम
भूल मुझे स्वीकार,
पर न बनाओ दासी मुझको
करो क्षमा इस बार!"

[२१]

[सुरंग से भाग निकलकर खड्गजम्बूक, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक से मिला और वे दोनों जंगल के बीच में एक उजड़े कुँए के पास केशव और जयमल्ल के आने की इन्तज़ार करने लगे। परन्तु जब आखिर वे कुँए में से निकले तो जम्बूक ब्रह्मदण्डी को पास के पेड़ों में किसी का चिल्लाना सुनाई दिया और वे भागने लगे। बाद में—]

केशव, जयमल्ल और जंगली युवक कुँए में से बाहर आते ही खड्गजम्बूक और ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक को तेज़ी से भागता देख घबराये। उनके साथ कुछ नरभक्षक भी सिर पर पैर रखकर जंगल में भाग रहे थे। इतने में पेड़ों पर से केशव का बूढ़ा पिता, गंडभेरुण्ड का अनुचर जंगली लड़का नीचे कूदे।

अपने पिता को देखते ही केशव को आनन्द हुआ। हाथ ऊपर करके, वह ज़ोर से चिल्लाया—"बाबा!"

वह आगे भागने को था कि कुँए में से भयंकर ध्वनि सुनाई दी।

तब जाकर केशव और जयमल्ल को पता लगा कि उनको सुरंग में से कुछ लोग खदेड़ रहे थे।

तुरत उन दोनों के और जंगली लड़के के पीछे दो कदम कदम रखते ही बूढ़े ने ज़ोर से हँसकर कहा—"उन दुष्टों को मैंने डरा दिया है। मैं चिल्लाया कि इस पेड़ पर भीम, आम्ल के पेड़ पर बकासुर, वे नीचे यह सुनते ही भाग निकले। फिलहाल कोई डर नहीं है।" उसने सामने जाना चाहा।

केशव जान गया कि उसका पिता यह न जानता था कि नरभक्षक उसका पीछा कर रहे थे।

उसने पीछे मुड़कर कहा—"बाबा, अभी हम खतरे से बाहर नहीं हुए हैं। नरभक्षकों का झुन्ड का झुन्ड सुरंग में से बाहर आ रहा है।" वह अभी कह रहा था कि दस बारह नरभक्षक ज़ोर से चिल्लाते, भाले लेकर झुंड में से बाहर निकले।

उसी समय बूढ़ा, जंगली लड़का जहाँ खड़े थे, उसके पीछे के पेड़ों के पास से आवाज़ आई—"हम फिजूल ही डर गये। इस बूढ़े ने हमें खूब चकमा दिया। सब मिलकर, ये पाँच ही हैं। मारो इनको...." यह आवाज़ [illegible] की थी।

"कालभैरव, उत्पातों के यह मूल!" केशव को मत मारो। उसे ज़िन्दा पकड़ लो। उसके मर जाने पर हमारा जीना व्यर्थ है। भयंकर घाटी....सोना....चान्दी ....आधा राज्य...." [illegible] फिर चीखता चिल्लाने लगा।

एक क्षण में आशा के विरुद्ध यह सब होता देख, बूढ़ा भौंचक्का-सा रह गया। कितने ही दिनों बाद वह अपने लड़के को देख रहा था। पर उसके नसीब में यह

खुशी भी न थी। अब मुझे और मेरे लड़के को सब कुछ छोड़-छाड़कर इन नरभक्षकों से भी लोहा लेना होगा— बूढ़े ने सोचा।

"अरे छोटे गंडेजन्ना, तुम मत घबराओ। हमारे हाथ में जब तक तलवार है, हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, बेटा...." कहता बूढ़ा, नरभक्षकों से भिड़ उठा।

बूढ़े के प्यार के नाम के अनुरूप, छोटा गंडेजन्ना बड़ा शूर था। वह भी भय किस चिड़िया का नाम है, नहीं जानता था। उसने अपनी तलवार से आगे बढ़ते नरभक्षकों में से पाँच-छः को खतम कर दिया। पर नरभक्षकों की संख्या बढ़ती जाती थी। पेड़ों के पीछे से उनके झुन्ड के झुन्ड आ रहे थे। केशव और जयमल्ल और उनके साथ का जंगली लड़का लड़ते लड़ते धीमे धीमे पेड़ों के पीछे हटने लगे।

"ज्येष्ठ, कनिष्ठ, इतने सारे दुष्टों से, आमने सामने खड़े होकर युद्ध नहीं किया जा सकता। जंगलों में भाग जाओ। हम दोनों भी भागनेवाले हैं। हम जैसे-तैसे तुमसे बाद में मिलेंगे।" कहता, बूढ़ा जोर से चिल्लाया। पास के दो नरभक्षकों को अपनी तलवार से मार दिया और फिर जंगल में भागने लगा। छोटा गंडेजन्ना भी शत्रुओं में से रास्ता निकालता बूढ़े के पीछे-पीछे भागने लगा।

इस बीच केशव, जयमल्ल और जंगल युवक भी यह जानकर कि नरभक्षकों से लड़ना बेकार था, एक दूसरे की रक्षा करते पेड़ों के झुन्ड की ओर भागने लगे। परन्तु नरभक्षक चिल्लाते चिल्लाते उनको घेरते आ रहे थे।

"इन दुष्टों को—केशव को भी मार दो। इनको जीते जी पकड़ने की कोशिश करना ठीक नहीं है। वह इनका फायदा उठाकर हमारे लोगों को मार रहा है।" चण्डमण्डूक ज़ोर से चिल्लाया।

"केशव और उसको मारना है.... कालभैरव....भयंकर घाटी...." अक्लमण्डी मान्त्रिक ज़ोर से गुनगुनाया।

मण्डूक को, जो अपने अनुचरों का कराहना सुन रहा था, मान्त्रिक का गुनगुनाना सुन, बड़ा गुस्सा आया। लाल पीले होते हुए उसने अपनी लाठी, अक्लमण्डी के पेट में घुसेड़ते हुए कहा—"बूढ़ा....मान्त्रिक कहीं का। तुम जाने क्यों इस द्वीप में घो आ गये। मुझे आधा राज्य और धन सम्पदा का लालच दिखाकर, मेरे सब अनुचरों को उस केशव की तलवार का शिकार करा रहे हो! तुम्हारी चमड़ी उखड़वाकर भुसकी भरवा दूँगा...." दान्त पीसते पीसते उसने कहा।

मण्डूक की लाठी लगते ही अक्लमण्डी ज़ोर से चिल्लाया—"भस्मासकेश्वर, आप अपनी काठ की तलवार से इतनी ज़ोर से न मारिये। मैं शरीर के बल से नहीं, मन्त्रों के बल से जी रहा हूँ। आपने जैसा कहा है मैं बूढ़ा—क्यों वृद्ध नहीं हूँ। मन्त्र वृद्ध हूँ।"

"यदि तुम इतने बड़े मन्त्र वेत्ता हो, तो देखो यह केशव मेरे अनुचरों को पछाड़, जंगल में भागा जा रहा है। उसको रोको। देखें।" चण्डमण्डूक ने लाठी से अक्लमण्डी के पेट पर मारते हुए कहा।

अक्लमण्डी ने दोनों हाथ जोड़कर, काँपते हुए, मण्डूक को नमस्कार करके

कहा—"नरभक्षक धर्मांतक मणि! आप अपना हाथ जरा दूर ही रखिये। अगर आप चाहें, तो केशव और उसके साथियों को जहाँ खड़े हैं, वहीं भस्म कर सकता हूँ। इस द्वीप को भी आकाश में उठाकर, क्षीरसागर के बीच में फेंक सकता हूँ। आग आँधी को मिला सकता हूँ। समुद्रों में तूफान उठा कर....भूमि को...."

अक्कदन्ती की बकवास सुनकर नाग मण्डूक गरमा उठा। उसने उसकी भुजा पर चोट करते हुए कहा—"बस बकवास बन्द।"

वह फिर अपनी आगे से जाते हुए अनुचरों से मिलने जल्दी जल्दी गया।

हाँफते हाँफते, रोते रोते चार पाँच नरभक्षकों ने नागमण्डूक को अपने घाव दिखाये। "महामण्डूक! जो कुछ हमसे बन सका हमने किया। पर वे दुष्ट, हममें से बहुतों को मारकर, मण्डूक पर्वतों की ओर भाग गये हैं।" उन्होंने हाँफते हाँफते रोते धोते कहा।

पास के पेड़ों पर से शिखिवर्मा और शक्तिवर्मा चिल्लाये—"आ रहे हैं.... अक्कदन्ती...." वे बन्दरों की तरह नीचे उतर आये।

"यहाँ इतना भयंकर युद्ध हो रहा था और तुम पेड़ों पर जा छुपे।" चण्डमण्डूक ने गुस्से में कहा।

"पेड़ों पर छुप गये हम!" शिखि और शक्तिवर्मा ने कहा—"जयमल्ल का बायाँ हाथ किसने काटा था! किसने इस तरह जादू किया था कि बूढ़े की नाक नीचे आ गिरी थी! हमी ने तो...."

चण्डमण्डूक ने उन दोनों की ओर सन्देह की दृष्टि से देखा। अक्कदन्ती ने मुँह बनाते हुए कहा—"हैं....हैं, मैं यह जानता ही था। तुम शूर हो, वीर हो, तो जब जाओ, उन दुष्टों को ढूँढ लाओ। सुना है, वे पहाड़ों पर भाग गये हैं।" बिना मण्डूक के देखे, उसने उनको इशारा किया।

अक्कदन्ती और चण्डमण्डूक यूँ आपस में उलझ-सुलझ रहे थे कि नरभक्षकों से बचकर, केशव और जयमल्ल और जंगली
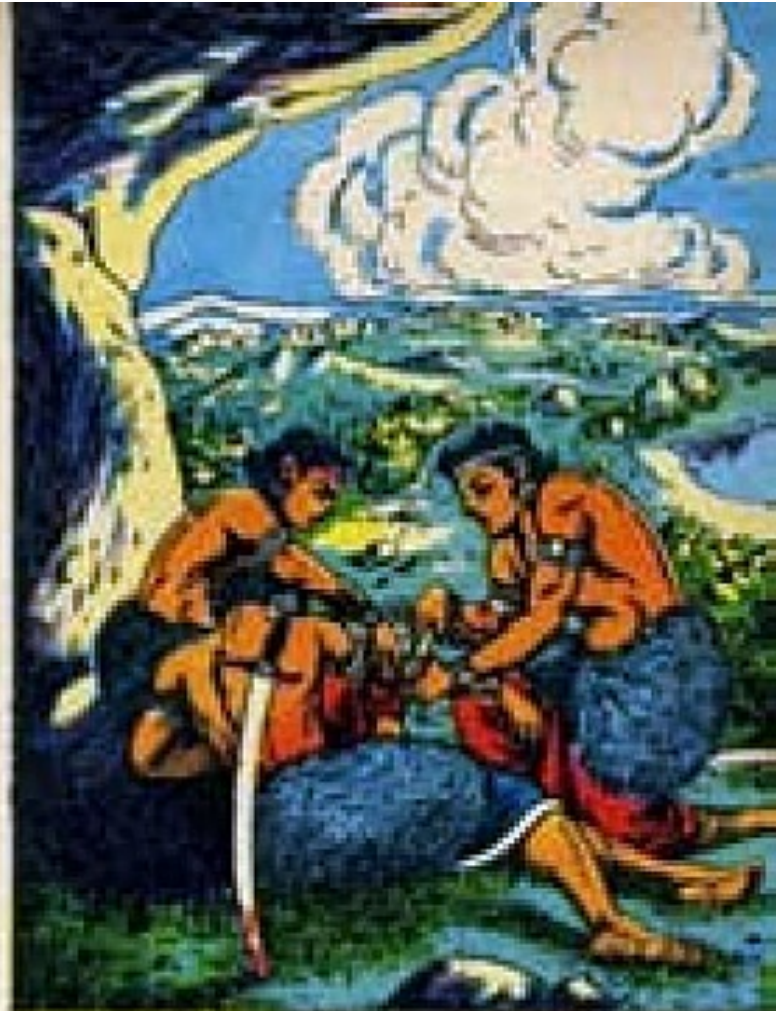
लम्बा द्वीप के घने जंगल में पहुँचे और छुपने के लिए किसी गुफा की खोज करने लगे।

सिवाय केशव के, दोनों को नरभक्षकों से लड़ते हुए घाव लगे थे। परन्तु वे कोई खास खतरनाक न थे। जंगली युवक ने जड़ी बूटियाँ लाकर अपने और जयमल्ल के घावों पर बाँधे।

पहाड़ के नीचे का शोर शराबा सुनकर, केशव और उसके साथी जान गये कि नरभक्षक उनको खोज रहे थे। केशव को अपने पिता के बारे में फ़िक्र सताने लगी।

क्या वह नरभक्षकों के चुंगल से निकल कर भाग गया होगा!

"केशव, तुम अपने पिता के बारे में फ़िक्र न करो। मेरा विश्वास है कि वह भी हमारी तरह जंगलों में भाग गया है। आओ, हम इस गुफा में घुस जायें।" कहकर जयमल ने पत्थरों में से एक दरार में देखा।

उस दरार में से तीनों अन्दर गये, अन्दर कोई गुफा-सी थी। तीनों उसमें घुस सकते थे। गुफा में पैर रखते ही जंगली युवक जोर से उछला और चिल्लाया—"यहाँ कोई दो शव हैं। होशियार, सावधान।"

जयमल ने गुफा के अन्दर के भाग को गौर से देखा। वहाँ उसे दो मानव कंकाल दिखाई दिये। उसने हँसते हुए जंगली युवक की ओर मुड़कर कहा—"ये शव नहीं हैं, अस्थिपंजर हैं। डरो मत.... उनमें और धूलि के ढेर में कोई भेद नहीं है। हम...."

जयमल अभी कह ही रहा था कि उसे "भुस" शब्द सुनाई दिया। तुरत एक चमचमाता पत्थर गुफा की पिछली तरफ़ से आगे गिरे। गुफा में रोशनी हो गई।

केशव और उसके साथी वहाँ भागे भागे गये। उनके भय और आश्चर्य की सीमा न थी।

एक महासर्प एक ऐसे पशु से, जिसको उन्होंने कभी न देखा था, झगड़ रहा था। सर्प की फुंकार और भयंकर पशु का अर्तनाद सुनकर, तीनों बालकों के मन में काँपने लगे। [अभी है]

कठिन परीक्षा

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा, वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजन्, ऐसा लगता है, तुम्हारी कोई कठिन परीक्षा ले रहा है। मैं नहीं जानता कि तुम इस परीक्षा में सफल होगे कि नहीं, पर तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक राजा के, एक के बाद एक चार लड़कियाँ हुईं। पर एक भी अधिक समय तक न जीवित रहीं। पहिले तो राजा को यह चिन्ता थी कि उसके लड़के न हुए थे, फिर वह सोचने लगा, अच्छा हो, यदि लड़कियाँ ही जीवित रहें।

बेताल कथाएँ

रानी जब पाँचवी बार गर्भवती हुई, तो उस राजा के पास एक बड़ा मन्त्रवेत्ता आया। मन्त्रवेत्ता ने यह जानकर कि राजा के चार लड़कियाँ हुई थीं और चारों मर गई थीं, कहा—"राजा, तुम्हारे लड़के नहीं हो सकते। तुम्हारी लड़कियों को भी कोई दुष्ट शक्ति मार रही है। इस बार तुम्हें फिर लड़की होगी। परन्तु उस लड़की पर कोई आपत्ति न आवे, यह मैं देखूँगा। तुम अपनी लड़की को जब तक सोलह वर्ष की न हो जावे, राजमहल से न जाने दो। सोलह वर्ष बाद उसका विवाह कर दो। उसके लिए वर कैसे चुना जावे यह भी मैं बतलाता हूँ। मेरी बताई हुई जगह पर एक शीशा रखवाइये। जो उस शीशे के सामने खड़े होकर, अन्तःपुर में राजकुमारी को देख सके, वही उसका पति है। उसके लिए आपको खोजने की जरूरत नहीं है। वह ही आपके घर आयेगा।"

मन्त्रवेत्ता ने राजमहल के चारों ओर अपनी मन्त्रशक्ति से रक्षा का प्रबन्ध किया। राजमहल के अतिथि गृह में उसने एक शीशा रखवाया।

जैसा उसने कहा था, रानी के फिर लड़की हुई। उस लड़की का नाम मेखला रखा गया। मन्त्रवेत्ता के आदेश के अनुसार वह महल में ही बच्ची बड़ी हो गई। वह बड़ी सुन्दर हुई। यद्यपि उसको किसी ने न देखा था, पर उसके सौन्दर्य की ख्याति दूर दूर के देशों में भी पहुँची।

उसको देखने, और यदि वह सचमुच सुन्दर हो, तो उससे विवाह करने के लिए बहुत से राजकुमार निकल पड़े। क्योंकि मेखला भी विवाह योग्य हो गई थी राजा ने इन राजकुमारों को

अपने अतिथि गृह में रखा और उनका आतिथ्य किया।

राजकुमारी को देखनेवाले राजकुमारों ने अपने सेवकों द्वारा यह व्यक्त कर दिया कि राजकुमारी के जँचने पर वे उससे विवाह करने आये थे।

उनके यह प्रस्ताव करते ही राजा अपने अतिथियों से कहता—"अभी आपने मेरी लड़की नहीं देखी है। उस शीशे में देखिये, दिखाई देगी। यदि आपको जँचे तो, बाकी बातें बाद में की जा सकती हैं। अतिथि शीशे में देखते। उन्हें कुछ भी न दिखाई देता। राजा उनसे कहता कि वह अपनी लड़की का उनसे विवाह न कर सकेगा।

इस तरह कुछ मास बीतने के बाद, सुवर्ण देश का राजकुमार कमल, देश परिभ्रमण करता, अपने नौकर चाकरों के साथ उस देश में आया। वह मेनका के बारे में कुछ न जानता था। राजा ने उसको भी अपने अतिथि गृह में ठहराकर, उसका भी आतिथ्य किया। राजा को लगा कि अब तक आये हुए राजकुमारों की अपेक्षा यह राजकुमार अधिक उपयुक्त

था। पर राजा ने सोचा कि यह कभी यह बात छेड़ेगा, जब उसका अतिथि विवाह का प्रस्ताव रखेगा।

कमल अतिथि गृह में पहुँचने के बाद, शीशे के सामने आया। पर उसी शीशे में उसको अपना मुँह तो दिखाई नहीं दिया, परन्तु अन्तःपुर में बैठी मेनका दिखाई दी। उसके असाधारण सौन्दर्य को देखकर कमल मूर्छित हो गया।

उसके मूर्छित होने का कारण किसी को न मालूम था। उसके सेवकों ने हो हल्ला किया। राजा घबराता आया। सेवकों

की सेवा शुश्रुषा करने के बाद राजकुमार को होश आया और उसने बताया कि वह क्यों मूर्छित हो गया था ।

राजा को यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि शीशे में उसने उसकी लड़की को ही देखा था ।

वल्लर ने जब शीशे में देखी लड़की का वर्णन किया, तो राजा जान गया कि वह ही उसका दामाद था । उसने वल्लर को सारी बात बताकर कहा—"तुम ही, मेरी लड़की के विधि निर्णीत पति हो । यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो जल्दी ही मुहूर्त निकलवाकर, तुम दोनों का विवाह करूँगा ।" वल्लर इसके लिए खुशी खुशी मान गया ।

शुभ मुहूर्त में वल्लर और मेखला का विवाह हो गया । ससुराल में कुछ दिन रहकर, वल्लर अपनी पत्नी के साथ, अपने देश की ओर निकल पड़ा । एक दिन वे नाव में यात्रा कर रहे थे कि एक अजीब बात हुई ।

वल्लर के सेवकों में कम्बर नाम का एक बावना था । वह पहले वल्लर का अंगरक्षक था । युद्ध में कम्बर, वल्लर की रक्षा करके, अपना बायाँ हाथ खो बैठा था । इसके बाद वल्लर ने कम्बर को अपना विश्वासपात्र नौकर बना लिया था ।

सब नाव में थे कि कम्बर को, रात में, दूरी पर दो स्वर सुनाई दिये ।

"ससुराल जाती इस नयी पत्नी पर, तीन आपत्तियाँ आनेवाली हैं ।" एक स्वर ने कहा ।

"वे आपत्तियाँ क्या हैं?" दूसरे स्वर ने पूछा ।

"जन्मस्थान पर पहुँचने के बाद, राजकुमार किनारे पर एक सुनहरे रंग का

घोड़ा देखेगा। वह उस पर सवार होना चाहेगा। उसके उस पर सवार होते ही, घोड़ा अदृश्य हो जायेगा। पति के दुख में राजकुमारी मर जायेगी।" पहिले स्वर ने कहा।

"तो इसका निवारण कैसे किया जाये?" दूसरे स्वर ने पूछा।

"एक ही निवारण है। उस समय किसी को वहाँ होना चाहिए। राजकुमार के घोड़े पर सवार होने से पहिले, उसको उस घोड़े को मार देना होगा। इस प्रकार एक आपत्ति तो टल जायेगी, पर दूसरी रहेगी। वह यह कि इनके घर पहुँचने पर पहिनने के लिए नये कपड़े दिये जायेंगे। उनमें सोने की जरी से बनाये वस्त्र राजकुमारी को आकर्षित करेंगे। उन कपड़ों के पहिनते ही राजकुमारी जलकर राख हो जायेगी। यदि उसके उन्हें पहिनने से पहिले उनको आग में डाल दिया गया, तो वह आपत्ति भी टल जायेगी।" पहिले स्वर ने कहा।

"तीसरी आपत्ति क्या है?" दूसरे स्वर ने कहा।

"वधू के गले में सास एक हार डालेगी। उस हार का कीड़ा राजकुमारी को काटेगा। उसके काटने से राजकुमारी मर जायेगी। उस समय यदि कोई राजकुमारी के हाथ के खून की तीन बूँदें, उसकी आँखों में डाल देगा, तो वह आपत्ति भी टल जायेगी। इसके बाद कोई आपत्ति नहीं आयेगी। परन्तु यदि कोई इन आपत्तियों का रहस्य जान भी जाये, तो उसे किसी और को इनके बारे में नहीं कहना चाहिए। यदि किसी को कहेगा, तो वह पत्थर हो जायेगा।" पहिले स्वर ने कहा।

मेखला के हाथ में वह मुरझाकर, फूल निकालकर, मेखला की आँखों में डाल दिया।

तब तक यह कोई भी न जान पाया था कि वह मर गई थी। जब यह बात मालूम हुई, तो बसर ने सोचा कि कसर ने ही उसको मारा था। "इस दुष्ट को बाँध दो और इसका सिर कटवा दो।" उसने सैनिकों से कहा।

"राजकुमारी को प्राणों का कोई भय नहीं है। वे जीवित होंगी...." कसर ने साहस करके कहा।

उसने कुछ देर देखा। परन्तु मेखला के प्राण वापिस न आये।

"यह पागल हो गया है। इसका जीवित रहना खतरनाक है। सिर कटवा दो।" बसर ने कहा।

यह सोचकर कि वह अवश्य मारा जायेगा, उसने जो कुछ सीमा की भाषा में सुना था, वह साफ़-साफ़ कह दिया और वह वहीं पत्थर हो गया।

कसर के मूर्ति हो जाने के बाद मेखला में चेतना आई। जल्दी ही वह उठकर बैठ गई। बसर को बड़ा अफ़सोस

हुआ कि बिना वजह के कसर उसके अज्ञान का शिकार हो गया था।

कुछ वर्ष बीत गये। मेखला के दो लड़के हुए। परन्तु बसर सम्पूर्ण आनन्द न पा सका, क्योंकि कसर की मूर्ति हमेशा उसको दीखती रहती। पति पत्नी प्रायः उस मूर्ति के पास बैठकर गुज़रे का शोक किया करते।

एक दिन जब वे दोनों मूर्ति के पास बैठे बातें कर रहे थे कि उनको कोई स्वर सुनाई दिया। उन्होंने बातें करना छोड़ सुनना शुरू किया।

"क्यों, कमर के लिए क्यों शोक कर रहे हो ? तुम अपने दोनों लड़के बलि कर दोगे तो कमर जीवित हो उठेगा..." स्वर ने कहा।

यह सुन बल्लर अपने दोनों लड़कों को लाकर, अपनी तलवार से मारने गया, पर कमर जो अब तक पत्थर की तरह था, चिल्लाया—"ठहरो, ठहरो।" और फिर उसने दोनों लड़कों को अपने पास खींच लिया।

कमर फिर जीवित था, बल्लर और मेखला बड़े खुश हुए।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक ही सन्देह है। बल्लर के अपने लड़कों को बलि दिये बगैर कमर कैसे जीवित हो उठा! यदि तुमने इस प्रश्न का उत्तर जानबूझकर न दिया, तो तुम्हारे सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"मेखला की आपत्तियों के बाद सभी घटनायें, बल्लर की परीक्षायें-सी लगीं। क्योंकि वह पहिली परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ था, इसलिए वह कमर को खो बैठा था। इसके लिए वह पछताया भी था। यह जानने के लिए कि यह पछतावा कहाँ तक स्वाभाविक और ठीक था, अमानुषिक शक्तियों ने एक और परीक्षा रखी। इसमें वह उत्तीर्ण हो गया था। बल्लर की परीक्षा लेनेवाली अमानुषिक शक्तियाँ खराब न थीं, वे बल्लर के लड़कों की बलि नहीं चाहती थीं। इसलिए उनके प्राण जाने से पहिले ही कमर जीवित हो उठा।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

च्यवन की कथा

भृगु पुराणों में प्रसिद्ध है। यह ब्रह्मा के हृदय से पैदा हुआ था। इसकी पत्नी के एक लड़का हुआ, जिसका नाम कवि था। इस कवि का लड़का ही राक्षसों का गुरु शुक्र था।

एक बार देवताओं ने राक्षसों को खदेड़ा, तो भृगु की पत्नी ने उनकी रक्षा की। तब देवताओं की ओर से विष्णु आये और उन्होंने अपने चक्रायुध से भृगु की पत्नी को मार दिया। भृगु विष्णु पर नाराज हुआ। तब उसने उनको शाप दिया—"तुम भी मानव जन्म लो, पत्नी के वियोग का अनुभव करो।" इसके कारण ही विष्णु राम के रूप में अवतरित हुए और उन्होंने सीता के वियोग का अनुभव किया।

भृगु की और भी पत्नियाँ थीं। उनमें पुलोमा नाम की एक थी। एक दिन भृगु पुलोमा को अग्नि गृह में, कुछ होम कार्य देखने के लिए कह, कहीं चला गया। उस समय पुलोम नाम का राक्षस आया। पुलोमा को वहाँ देखकर अग्नि से उसने पूछा—"यह कौन है?"

"इसका नाम पुलोमा है। भृगु की पत्नी है।" अग्नि ने उत्तर दिया।

यह सुन पुलोम ने कहा—"इसको पहिले मैंने ब्याहा था, भृगु ने मेरे बाद इससे विवाह किया।" कहकर उसने सूअर का रूप धारण किया और गर्भिणी पुलोमा को उठाकर भागने लगा। तब उसके गर्भ का शिशु बाहर आया और जब उसने पुलोम को घूरकर देखा, तो

वह वहीं तत्काल शान्त हो गया। वह बड़ा ही अद्भुत शक्तियोंवाला च्यवन था।

च्यवन ने बहुत साल तक कठिन तपस्या की। उसके चारों ओर बाम्बियाँ तक बन गईं।

वैवस्वत का लड़का, शर्याति, अपनी लड़की सुकन्या और सैनिकों के साथ वन में विहार करता उस जगह आया, जहाँ च्यवन तपस्या कर रहा था। च्यवन की बाम्बी में से बिजली की किरणों का-सा आता देख, सुकन्या ने अपने सेवकों से वह बाम्बी खुदवाई। ऐसा करने से च्यवन की ओर लगी और खून बहने लगा। च्यवन को गुस्सा आ गया और उसने शर्याति की सेना के मल-मूत्र रोक दिये। सैनिकों को बड़ा कष्ट हुआ।

सुकन्या की गलती के कारण ही सैनिकों पर यह आपत्ति आई थी, यह जानकर शर्याति च्यवन के पास गया। उसने उससे क्षमा माँगकर कहा कि मेरी लड़की ने अनजाने यह किया है।

"यदि तुमने अपनी लड़की का मेरे साथ विवाह किया, तो मैं अपना क्रोध वापिस ले लूँगा।" च्यवन ने कहा। शर्याति इसके लिए मान गया और उसने सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया। च्यवन बूढ़ा था और बड़ा क्रोधी भी। फिर भी सुकन्या ने उसकी खूब सेवा शुश्रूषा करके उसका अभिमान और विश्वास पा लिया।

एक दिन अश्विनी देवता, च्यवन के आश्रम में आये। च्यवन ने उनसे कहा— "यदि तुमने वार्धक्य हटाकर मुझे यौवन दिया, तो शर्याति के यज्ञ में मैं तुमको सोमपान करवाऊँगा और यज्ञ का भाग भी दिलवाऊँगा।" वे इसके लिए मान गये।

जैसा हम कहें वैसा करो, हम तुम्हें यौवन दिलवा देंगे। उन्होंने कहा।

उन्होंने च्यवन को बताया कि उसे क्या करना था। फिर सुकन्या के पास आकर कहा—"तुम दुखी हो। इस बूढ़े के साथ क्यों गृहस्थी कर रही हो! यदि तुम हमारे साथ आये तो तुम्हें नवयुवक पति दिलवायेंगे।"

सुकन्या ये बातें सुनकर क्रुद्ध हो उठी। उसने च्यवन से भी कहा। परन्तु च्यवन क्रुद्ध नहीं हुआ। उसने कहा—"उनके कहे अनुसार किसी युवक को अपना पति बना लो।" तब सुकन्या ने अश्विनी देवताओं के पास आकर कहा—"मैं तुम्हारे साथ आती हूँ। मुझे नवयुवक पति दिलवाइये।"

अश्विनी देवता पास के झरने में घुसे। उसी समय च्यवन ने भी उसी झरने में डुबकी लगाई। फिर तीन नवयुवक होकर झरने में से उठे और सुकन्या के सामने आ खड़े हुए। सुकन्या न जान सकी कि उनमें कौन उसका पति था। उसने अश्विनी कुमारों को बताने के लिए कहा। उन्होंने उसको च्यवन दिखाया। इसके बाद सुकन्या, युवक च्यवन के साथ अपने आश्रम में गृहस्थी निभाने लगी।

कुछ समय बीता। शर्याति अपनी लड़की और दामाद को बुलाने आया। उसे यह सन्देह करके बड़ा दुःख हुआ कि उसकी लड़की अपने पति से गृहस्थी किये बगैर किसी नवयुवक के साथ रह रही थी।

सुकन्या ने फिर अपने पिता को बताया कि वह सुन्दर नवयुवक उसका पति च्यवन ही था। अश्विनी देवताओं के अनुग्रह से वह नवयुवक हो गया था।

शर्याति ने यज्ञ किया। च्यवन ने जब उनको अपने वचन के अनुसार यज्ञ का भाग दिलवाना चाहा, तो इन्द्र ने आपत्ति की कि वे इसके योग्य न थे। च्यवन ने इन्द्र की परवाह न की और उसने उनके भाग उनको दे दिये। इन्द्र को गुस्सा आ गया, उसने वज्रायुध से च्यवन को मारना चाहा। च्यवन ने उसके उठे हाथ को स्तम्भ-सा कर दिया। यही नहीं च्यवन ने यज्ञ करके, मद नामक राक्षस को उत्पन्न किया। उस राक्षस ने वहाँ उपस्थित देवताओं को निगल जाना चाहा। इन्द्र ने डरकर च्यवन के चरण छुये। इन्द्र के यों शान्त हो जाने पर और देवताओं ने भी अश्विनी कुमारों के साथ सोमपान किया।

एक बार च्यवन ने गंगा और यमुना के संगम पर बारह वर्ष तपस्या की। जब मछियारों ने आकर वहाँ जाल फेंके, तो मछलियों के साथ उनको च्यवन भी मिले। उसको देखकर मछियारों ने माफ़ी माँगी। तब उसने उनसे कहा—"ये मछलियाँ मेरे साथ बारह वर्ष से रही हैं। मुझ से इन्होंने स्नेह किया है, मुझे भी इनके साथ ले जाकर बेच दो।"

उन मछियारों ने यह बात जाकर अपने राजा नहुष से कहा। नहुष ने जाकर च्यवन से मछियारों को माफ़ करने के लिए कहा—"उन्होंने अपना कर्तव्य किया है, कुलधर्म निभाया है। इसमें गलती क्या है। चाहो तो उनको मेरे शरीर का मूल्य देकर मुझे छुड़वाओ।" च्यवन ने राजा से कहा।

"मछियारों को हजार मोहरें दे दो।" राजा ने अपने सैनिकों से कहा।

"यह मेरा ठीक मूल्य नहीं है।" च्यवन ने कहा।

राजा ने कहा करोड़ मोहरें दूँगा। आधा राज्य दे दूँगा। सारा राज्य तक दे दूँगा। परन्तु च्यवन ने कहा कि यह सब उसके लिए ठीक मूल्य नहीं था।

राजा जब इस दुविधा में था कि क्या किया जाये, गविजात नाम के मुनि ने आकर राजा से कहा—"ब्राह्मण के लिए केवल गौ की ही कीमत है। मछियारों को एक गौ देकर, च्यवन को छुड़वाओ।" और जब राजा ने कहा कि उसके बदले एक गौ देगा, तो च्यवन सन्तुष्ट हो गया।

राजा से गौ लेकर, मछियारों ने उसे च्यवन को ही दान दे दिया। च्यवन ने सन्तुष्ट होकर मछियारों और मछलियों को उत्तम लोकों का अधिकारी होने के लिए आशीर्वाद दिया।

एक बार जब देवता कह रहे थे कि भृगुवंश और कुशिक वंश मिल जायेगा, तो च्यवन ने सुना। उसे लगा कि ऐसा होना नहीं चाहिए। किसी न किसी बहाने कुशिक वंश का नाश करने के लिए च्यवन कुशिक के घर गया। राजा और रानी ने उसका आतिथ्य किया। उन्होंने पूछा कि

वह उनसे क्या चाहता था, च्यवन ने उनसे सब तरह की सेवायें करवाईं। "मैं सो रहा हूँ। मैं जब तक न उठूँ, तब तक आप मेरे पैर पकड़िये। जब तक मैं सोता रहूँ, तो आप ख्याल रखिये कि मेरी निद्रा भंग न हो।"

च्यवन को अन्तःपुर में ही पलंग पर सुलाकर, कुशिक और उसकी पत्नी उसके पैर दबाने लगे। च्यवन जो सोया, तो इक्कीस दिन तक सोता रहा, और राजा रानी, उतने दिन बिना खाये पीये उसकी सेवा करते रहे। उसके बाद, च्यवन नींद से उठकर, बिना उनसे बात किये ही बाहर चला गया। राजदम्पति भी उसके पीछे गये। कुछ दूर जाने के बाद च्यवन अदृश्य हो गया और वे करते भी क्या! उनकी पत्नी जब अन्तःपुर वापिस आयी तो च्यवन को बिस्तरे पर ही सोता देख, चकित हो उठी और वे उसके पैर दबाने लगे।

आखिर, च्यवन सोकर उठा। राजदम्पति ने उसको नहलाया, धुलाया। "मुझे रथ में बिठाकर आप दोनों खींचिये।" च्यवन ने उनसे कहा। उन्होंने, उसको रथ में

बिठाकर अपने गलों पर रस्सी लगाकर रथ को खींचा। जब तक वे रथ खींचते रहे, काँटे की छड़ी से वह उनको मारता रहा। उनके शरीर खून से लथपथ हो गये।

इतना पाप करने पर भी राजदम्पति की सहनशक्ति बनी रही। यह देखकर, च्यवन को आश्चर्य हुआ। उसने रथ से उतरकर उनके शरीर छुये। तुरत उनके घाव जाते रहे। थकान जाती रही। दोनों में ही फिर यौवन आ गया। उनसे च्यवन ने कहा—"मैं जप के लिए गंगा के किनारे जा रहा हूँ। कल दोनों वहाँ आओ।" यह कहकर वह चला गया।

अगले दिन कुशिक और उसकी पत्नी गंगा के किनारे गये। च्यवन ने अपने योग बल से उनको स्वर्ग और वहाँ के भवन दिखाये। उन्होंने भवनों में प्रवेश किया। इतने में च्यवन अदृश्य हो गया। फिर उसने उन दम्पति से कहा कि जो चाहो माँगो, कुशिक ने च्यवन से पूछा—"आप इतने समय तक क्यों सोये?"

"यह सुनकर कि आपका और हमारा वंश मिल रहा है, मैंने मौका मिलने पर आपके वंश को नष्ट करने की सोची। इसलिए ही मैंने ये सब परीक्षायें की। परन्तु आपने मुझे कोई ऐसा मौका नहीं दिया। आपका पोता ऐसा होगा, जिसमें ब्रह्मतेज होगा।" च्यवन ने उन दम्पति से कहा।

कुशिक का पोता विश्वामित्र ही था। कुशिक के गाधी नाम का पुत्र हुआ। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय था, फिर भी वह देवताओं के द्वारा ब्रह्मर्षि कहा गया, मानवों ने भी उसको इसी तरह माना।

गन्धर्व सम्राट की लड़की

[२]

हुसन खुद ही मौत से न निकला था, पर उसने अपने शत्रु बेहराम का भी खात्मा कर दिया था।

उसने अपने हाथ की तश्तरी घुमा घुमाकर देखी। पर वह यह न जान सका कि उसका कैसे उपयोग किया जाये। कहीं ऐसा न हो कि वह अनजाने कुछ कर बैठे और कुछ का कुछ हो जाये, उसने उसे पेटी में खोंस लिया और चारों ओर देखने लगा।

यद्यपि पहाड़ की चोटी बादलों से भी ऊँची थी, तो भी वह सारा प्रान्त समतल था। कहीं एक पेड़ पौधा न था। बड़ा-सा पथरीला मैदान था। इस मैदान के एक सिरे पर हुसन था। उसके दूसरे सिरे पर उसको लपटें दिखाई दीं। यह सोच कि जहाँ मनुष्य नहीं है, वहाँ लपटें न होंगी। हुसन लपटों की ओर चलने लगा।

ज्यों ज्यों वह लपटों के पास चलता गया, त्यों त्यों वे लपटें महल का आकार लेती गईं। उस महल के चार बड़े बड़े खम्भे थे। उसके ऊपर एक गोल गुम्बज-सा था। खम्भों पर और गुम्बज पर सोने की परत थी। सूरज की रोशनी जब सोने की परत पर पड़ती, तो ऐसा लगता जैसे लपटें निकल रही हों।

हुसन बहुत थका हुआ था। "इस महल में मनुष्य तो नहीं रहते होंगे। शायद कोई यक्ष और गन्धर्व रहते होंगे। और, कुछ भी हो, द्वारपालक से ही मांगकर

कुछ पानी पी लूँगा। कहीं किसी कोने में पड़ा सीधी कमर के सो जाऊँगा।" सोचता, हसन हरे पत्थर के द्वार में होता, महल के आँगन में गया।

वह अभी थोड़ी दूर ही गया था कि दो कन्यायें, संगमरमर की बेन्च पर बैठी शतरंज खेल रही थीं।

पहिले तो उन्होंने हसन को नहीं देखा। पर थोड़ी देर में उनमें से छोटी ने सिर उठाकर, अपने पास एक युवक को खड़ा पाकर कहा—"बहिन! कोई आया हुआ है। दुष्ट बेहराम, हर साल इस तरह के युवकों को, बादलों के पहाड़ पर लाता रहता है। शायद इस लड़के को भी वह ही लाया है। अगर यही बात है तो वह उस धूर्त के हाथ से कैसे निकल सका!"

हसन ने उनके पैरों पर पड़कर कहा—"मैं ऐसा ही अभागा हूँ।" कहते कहते उसकी आँखों में नमी आ गई। उसकी हालत पर उस कन्या को बड़ा तरस आ गया। उसने अपनी बहिन से कहा—"मैं इस लड़के को अपने भाई के तौर पर पालने जा रही हूँ। इसके तुम ही गवाह हो।"

फिर वह हसन को महल में ले गई, उसको अच्छी तरह नहलाया। उसके पुराने कपड़े दूर फेंक दिये और उसको नये कपड़े दिये। तब बहिनों ने हसन को अपने बीच में बिठाकर खाना खिलाया।

यह सब हो जाने के बाद हसन ने कहा—"बहिनो, आपसे मिलने से पहिले, मैंने बहुत से कष्ट झेले हैं।" उसने अपनी सारी कहानी सुनाई।

जब उसने अपनी कहानी खतम की तो, उसको पालनेवाली ने भी अपनी कहानी को सुनानी शुरु की।

"हम एक गन्धर्व राजा की लड़कियाँ हैं। हम सब मिलकर सात हैं। हम सब एक पिता की सन्तान हैं, पर एक माता की नहीं हैं। सब में, मैं छोटी और ये बड़ी बहिन हैं। बाकी हमारी पाँच बहिनें शिकार पर गई हुई हैं। जल्दी ही वे वापिस आ जायेंगी। हमारे पिता का विश्वास है कि हम सातों से विवाह करनेवाला इस सृष्टि में कोई नहीं है। यह सोचकर कि हमें हमेशा अविवाहित ही रहना होगा, उन्होंने हमारे लिए इस वीरान जगह पर महल बनवाया है। यह प्रदेश वैसे बड़ा मनोहर है, समृद्ध है। जहाँ देखते वहाँ फूलों के पौधे और फलों के पेड़ हैं। अच्छी झीलें हैं। उनमें राजहंस हैं। स्वर्ग जैसे इस प्रदेश में हम बहुत खुश हैं। एक ही कमी है, जब देखते हैं, हमें बस अपनी ही शकलें दीखती हैं। नये मुँह नहीं दिखाई देते। तुम्हारे आने से हमारी यह कमी भी जाती रही। यह हमारे लिए बड़ी खुशी की बात है।"

वह अपने भाई से इस तरह बात कर रही थी कि बाकी पाँच राजकुमारियाँ भी शिकार से वापिस आयीं। वे भी बड़ी खुश हुईं कि उनको एक भाई मिल गया था। उनसे उन्होंने यह वचन ले लिया कि वह उनके साथ बहुत समय तक रहेगा। और कहीं न जायेगा।
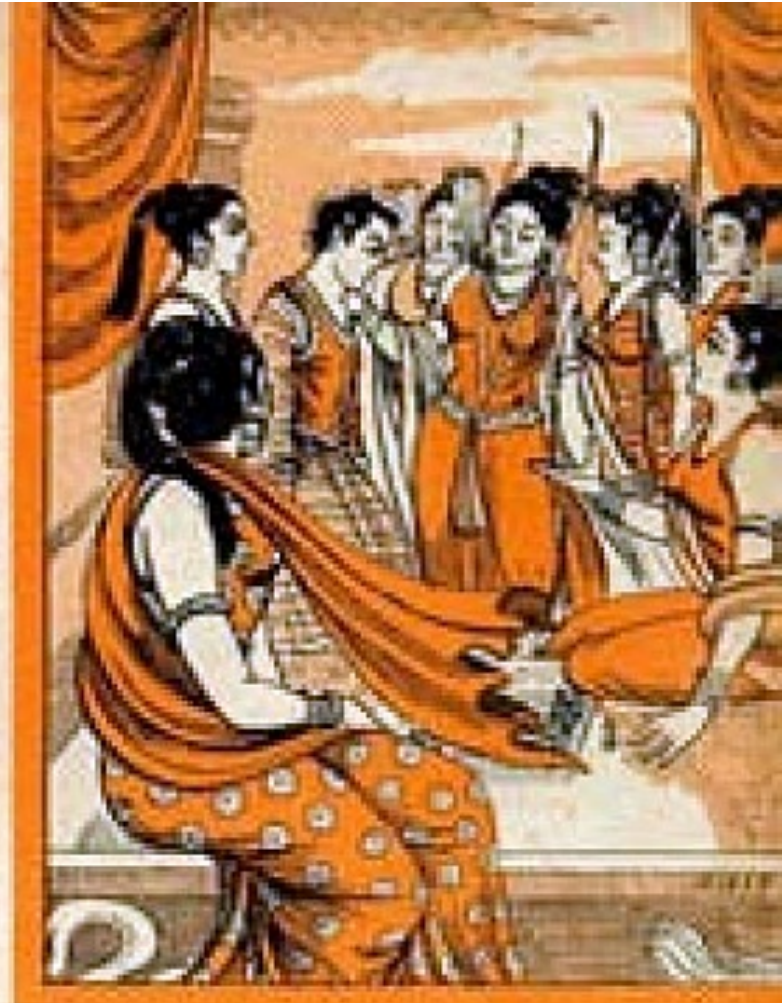
हमन वहाँ के आश्चर्य देखता, उनके साथ रहता, शिकार खेलता, समय बिता रहा था।

जितना उसको उन बहिनों पर गर्व था, उतना ही उनको भी उस पर गर्व था। नदी, नालों में खेलते, बाग-बगीचों में घूमते, एक दूसरे की दुनियाँ के बारे में जानते पूछते, वे

आठों इस तरह रहते, जैसे एक ही माता के बच्चे हों।"

एक बार जब वे पेड़ों के नीचे खेल रहे थे कि आकाश में इतनी धूल उठी कि सूर्य ही ढक गया। उसी समय उन्हें कहीं बिजली का कड़कना सुनाई दिया।

राजकुमारियों ने मानों भयभीत हो, हसन से कहा—"जाओ, कहीं छुप जाओ।"

सबसे छोटी राजकुमारी ने हसन का हाथ पकड़कर, पास में एक जगह ले जाकर उसको छुपा दिया।

जल्दी ही गन्धर्वों की एक सेना महल के पास आकर रुकी। एक और गन्धर्व राजा के गौरव में राजकुमारियों का पिता दावत दे रहा था, इसलिए अपनी लड़कियों को बुला लाने के लिए उसने सेना भेजी थी।

यह पता लगते ही सबसे छोटी राजकुमारी ने हसन के पास आकर कहा—"भाई, तुम्हें अकेला छोड़कर, हमें कहीं जाना पड़ रहा है। ये लो चाबियाँ। जब तक हम वापिस न आ जायें, तब तक यह सारा महल तुम्हारा है। पर जिस चाबी से यह ताला खुलता हो, उस कमरे में न जाना।" उसने नीले रंग की चाबी उसे दी।

फिर सातों राजकुमारियाँ उससे विदा लेकर, उनको लिवा लाने के लिए आये हुए सैनिकों के साथ अपने पिता के घर चली गयीं।

उनके चले जाने के बाद सारा महल सूना सूना-सा लगने लगा। हसन मायूस-सा सब जगह घूमता, अपनी बहिनों की चीज़ें देखता, जहाँ वे घूमती थीं, वहीं घूमता। उसको अकेलापन काटता-सा लगता

था। घूमता-घूमता वह उस किवाड़ के पास पहुँचा, जिसे उसे खोलना नहीं चाहिए था। उसे जब यह ख़याल आया कि उसे खोलना न चाहिए था, तो वह झट पीछे हट गया।

पर उसके मन में विचार उठने लगे थे। "क्यों इस किवाड़ को नहीं खोलना चाहिए? इस कमरे में क्या विचित्र वस्तु है? कुछ भी हो, मैंने वचन दिया है कि मैं इस कमरे में नहीं जाऊँगा।" यह सोचकर भी वह उस किवाड़ को न भूल सका। वह उसी के बारे में सोचता रहा और इसी सोच में सो भी न सका। चाहे जो भी कुछ हो, उसने उस किवाड़ को खोलने की ठानी। फिर भी उसने सबेरे तक सब्र करने का निश्चय किया। आखिर उसने दृढ़ निश्चय कर लिया। "भले ही प्राण चले जायें, पर इस किवाड़ को खोल कर रहूँगा।" हसन एक दीया लेकर उस किवाड़ के पास गया। उसने चाबी घुमाई। बिना किसी शब्द के किवाड़ खुल गये। हसन ने अन्दर पैर रखा।

उस कमरे में न कहीं लकड़ी का सामान था, न कालीन, न चटाई ही—कुछ भी न था। खाली कमरा। एक तरफ एक सीढ़ी थी। वह सीढ़ी कमरे की छत के ऊपर भी चली गई थी। हसन ने अपने हाथ का दीया नीचे रख दिया, सीढ़ियों पर चढ़कर, छत के ऊपर चला गया।

उसका भाग समतल था। वहाँ उसे एक छोटा-सा बाग दिखाई दिया। वहाँ पौधे वगैरह थे। बाग में पैर रखते ही उसे अत्यन्त सुन्दर दृश्य दिखाई दिया। उसके सामने एक झील थी, जिसमें आकाश का प्रतिबिम्ब था। झील के उस पार एक और आश्चर्यजनक महल था। उसके बुर्ज

आकाश को चूम रहे थे। उस महल से झील तक संगमरमर की सीढ़ियाँ थीं। सीढ़ियों के नीचे और पानी के ऊपर एक चबूतरा था, जो तरह तरह के कीमती हीरों से बनाया गया था। उस चबूतरे पर चार गुलाबी रंग के स्फटिक के खम्भे बने थे। उनके ऊपर हरे रंग का परदा और उसके नीचे सिंहासन था। इस चबूतरे में जो कारीगिरी दिखाई गई थी, वह बड़े-बड़े राजाओं के भी बस की बात न थी।

हसन मूर्ति की तरह खड़ा-खड़ा वह सौन्दर्य देख ही रहा था कि आकाश में से दस बड़े-बड़े पक्षी झील के किनारे मँडराने लगे। कुछ देर इधर उधर घूमने के बाद उनमें से एक बड़ा पक्षी, सिंहासन के पास आया। बाकी नौ पक्षी उसके पीछे आये।

हसन के देखते देखते, वे पक्षी, स्त्री बन गईं। एक एक स्त्री एक एक चान्द की तरह थी। अपने पक्षियों का चोला उतार कर, वे झील में जलक्रीड़ा करने लगीं। एक दूसरे के पीछे तैर कर ज़ोर से हँसने लगीं। उनके अट्टहास से दिग-दिगन्तर गूँज उठे।

उनमें से सबसे अधिक स्वस्थ और सुन्दर स्त्री ने हसन को आकर्षित किया। वह एक पेड़ के पीछे छुपकर, उस सुन्दरी की ओर एकटक देखने लगा, जिसने उसे आकर्षित किया था।

जल्दी ही वे स्त्रियाँ जलक्रीड़ा समाप्त करके, वस्त्र पहिनकर चान्दनी में विश्राम करने लगीं। इतने में किसी ने कहा—"सवेरा होनेवाला है। चलो हम अब चलें।" सबने तुरत अपने पक्षी चोगे पहिन लिये और फिर आकाश में उड़ने लगीं।

उनके जाने के बाद भी हसन शून्य आकाश में काफ़ी देर तक देखता रहा। हसन तब तक प्रेम न जानता था और जब उसे मालूम हुआ कि प्रेम क्या चीज़ थी, तो उसको जीवन ही शून्य लगने लगा। उसे सारा दिन यों लगा, जैसा कोई युग हो, फिर शाम होते ही वह झील के पास आया। परन्तु उस दिन वे स्त्रियाँ नहीं आयीं। अगले दिन रात भी वे नहीं आयीं।

हसन खाना, पीना, सोना सब छोड़कर निराश हो सोचने लगा—"अब जीने की अपेक्षा मरना ही अच्छा है।" वह रोज़ ब रोज़, इसी फ़िक्र में ही सूखता गया।

दस दिन बाद गन्धर्व राजकुमारियाँ पिता के घर से वापिस आयीं। आते ही हसन की बहिन उसे ढूँढती आई। उसकी हालत देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये। "अरे भाई, यह क्या हालत है तुम्हारी! क्यों ऐसे हो गये हो! मुँह सूख गया है। आँखों में गढ़ा-सा पड़ गया है। तुम्हारी बीमारी क्या है, बिना छुपाये, बताओ।" उसने कहा।

हसन ने आँसू बहाते हुए कहा—"मैंने जो ग़लती की थी, उसका फल भुगत रहा हूँ। मेरी कोई मदद नहीं कर सकता, मैं इस तरह ही प्राण छोड़ दूँगा।"

"तुम ऐसा न सोचो। तुम्हारे प्राण बचाने के लिए, हम सब अपने प्राण छोड़ देंगे। यदि तुम मर गये, तो मैं भी मर जाऊँगी।" उसकी बहिन ने कहा।

"खाना खाये मुझे दस दिन हो गये हैं।" कहकर उसने जो कुछ गुज़रा था, वह सुनाया।

हसन ने सोचा था कि जिस काम को करने से उसने मना किया था उसके करने पर वह उसे डाँटेगी, डपटेगी, परन्तु उसकी बहिन ने उसको एक बात तक नहीं कही, यही नहीं उस पर तरस खाकर उसने कहा—"तुम फ़िक्र न करो, तुमने जिस कन्या से प्रेम किया है मैं उसको दिलाने की भरसक कोशिश करूँगा। परन्तु तुम अपना यह भेद बाकी बहिनों से न कहना। जब ऐसे विवाह के बारे में बात उठे, जिसे सोचना भी नहीं चाहिए था, तो तुम यों दिखाना जैसे तुम यह भी न जानते हो कि वह कहाँ है? जब बहिनें पूछें कि तुम क्यों इस तरह सूख गये हो, तो उनसे कहना—"तुम्हारे लिये।" यह सलाह उसने दी।

फिर उसने अपनी बहिनों से कहा—"बिचारा, हसन हमारी गैरहाजरी में हमारे लिए ही सोचता रहा और अब पलंग पर पड़ा है। उसे अपनी माँ वगैरह याद हो आयी, वह बिचारा तड़पता रहा। बड़ी तकलीफ़ में है।"

यह सुन राजकुमारियाँ बड़ी दुखी हुईं। उसके पास जाकर, उन्होंने उसकी तरह तरह से उपचर्या की। उसे खाना खिलाया। जो कुछ उन्होंने अपने पिता के देश में देखा था, उसके बारे में उसे सुनाया।

एक महीने तक उन्होंने उसकी सेवा शुश्रूषा की, तब जाकर वह कुछ स्वस्थ हुआ।

फिर एक दिन राजकुमारियाँ शिकार पर निकलीं। सब से छोटी राजकुमारी यह कहकर कि वह हसन के साथ रहेगी उसके पास चली आयी।

औरों के जाते ही वह उसको शहर के पासवाले बाग में ले गई। "देखो, इस

झील के किनारे कितने ही नहाने के घाट हैं। उस कन्या ने, जिसको तुमने देखा था, कहाँ स्नान किया था ?"
हसन ने उसको वह जगह दिखाई, जहाँ सिंहासन रखा था।

उसने घबराते हुए कहा—"बाप रे बाप, जिन कन्याओं को तुमने देखा था वे गन्धर्व सम्राट की लड़कियाँ और उनकी सहेलियाँ हैं। उस सम्राट के नीचे हमारे पिता केवल एक छोटे-से सामन्त हैं। तुमने शायद सम्राट की सब से छोटी लड़की से प्रेम किया होगा। गन्धर्व सम्राट के लोक में मनुष्य तो क्या दूसरे गन्धर्व भी नहीं जा सकते। ये सम्राट की लड़कियाँ हर अमावस्या के दिन अपनी सहेलियों के साथ आती हैं। जलक्रीड़ा करके पक्षियों का चोगा पहिनकर ये अपने लोक में उड़ जाती हैं। जब तक तुम वह चोगा नहीं ले लेते, तब तक तुम उसे नहीं पा सकते। जब वह फिर नहाने आये, तो तुम कहीं छुप जाओ और जब वह जलक्रीड़ा कर रही हो, तो तुम उसका चोगा चुरा लो, भले ही उसके लिए वह गिड़गिड़ाये, पर तुम उसे न देना। यदि तुमने उसे वह दे दिया, तो तुम्हारे साथ हम, हमारे साथ हमारे पिता सब का सर्वनाश कर दिया जायेगा। तुम जैसे भी हो, उसके केश पकड़कर जल्दी जल्दी कुटीर लाओ। यदि तुमने यह किया, तो वह तुम्हारी बात मान जायेगी। उसके बाद जो होगा, सो देखेंगे।"

हसन ये बातें सुनकर तन्मय-सा हो उठा। उसमें बल और उत्साह फिर से आ गये। वह बहिन के साथ फिर महल में वापिस चला आया। वह दिन भर राजकुमारियों के साथ खुशी खुशी गप्पें मारता रहा।

अगले दिन अमावस्या थी। अन्धेरा होते ही, हसन झील के पास गया और सीढ़ियों के पास छुप गया। थोड़ी देर बाद, सम्राट की लड़की और उसकी सहेलियाँ उड़ती उड़ती आईं और अपने पक्षियों के आवरण उतारकर, पानी में उतरीं। हसन घबराता घबराता वहाँ गया और अपनी प्रियतमा के आवरण लेकर, वहीं कहीं छुप गया।

थोड़ी देर बाद, सम्राट की लड़की, पानी में से निकली। जब उसने अपना चोगा वगैरह न देखा, तो वह ज़ोर से चिल्लाई। उसका चिल्लाना सुन उसकी सहेलियाँ पानी से निकलीं। उनको भी मालूम हो गया कि क्या बात थी। वह जानकर उन्होंने अपनी मालकिन की मदद करने के बदले, अपने अपने कपड़े और चोगे पहिने और वहाँ से उड़कर आकाश में उड़ गईं।

सहेलियों द्वारा छोड़ देने के और अपमानित होने के बाद सम्राट की लड़की के पास हसन आया। उसको देखकर उसका दिल पिघल उठा। पर वह उसको देखते ही झील के किनारे भागने लगी। वह उसका पीछा करने लगा। आखिर उसने उसको पकड़ लिया और उसके केश पकड़कर वह अपने साथ उसको चलाने लगा। वह भी आँख मूँदकर, जैसे उसने कहा, वैसे ही उसके साथ चलती जाती थी। हसन ने न उसके आँसुओं की परवाह की, न उसके रोने चिल्लाने की ही। वह उसको अपने कमरे में ले आया। उसको अन्दर रखकर, किवाड़ बन्द करके वह घर पहले अपनी बहिन के पास गया। [अभी है]

भीम की कथा

एक गाँव में, ज़मीन्दार के एक सम्बन्धी के घर में एक लड़की मर गई। उसके पीछे ज़मीन्दार का परिवार भीम के साथ निकला। जब शव के पास सब बैठकर रो रहे थे, तो भीम भी रो पड़ा। इस तरह की घटनायें उसने कभी न देखी थीं—शव को नहलाना, सजाना, ब्राह्मणों का मन्त्रोच्चारण, शव को श्मशान ले जाना, दहन करना, पति द्वारा मृत पत्नी का दाह किया जाना, ये सब बातें भीम के मन में खुद-सी गईं।

अन्त्येष्टिक्रिया के बाद भी भीम के मन में ये ही बातें घूमती रहीं। उस दिन रात को सपने में भी ये ही बातें आयीं। परन्तु व्यक्ति बदले हुए थे। महालक्ष्मी मर गई थी, सब रो रहे थे। महालक्ष्मी को नहलाकर, सजाकर, श्मशान ले गये। आग लेकर वह भी महालक्ष्मी के शव के साथ चला। श्मशान में चिता बनाकर, महालक्ष्मी को उस पर रखा गया। चिता को उसने ही आग दिखाई। क्षण में महालक्ष्मी राख हो गई। नींद में ही भीम ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

पास में ही महालक्ष्मी सो रही थी, वह उठी और उसे उठाकर उसने पूछा—"क्यों यों बड़बड़ा रहे हो?"

भीम अपनी पत्नी की आवाज़ सुनकर उठा। महालक्ष्मी को देखकर, घबराते हुए उसने कहा—"तुम मर गई हो। मैंने ही तुम्हारा दहन संस्कार किया, तुम भूत हो।"

महालक्ष्मी ने हँसकर कहा—"लगता है, आपको कोई ख़राब सपना आया है। मैं कहाँ मरी हूँ। देखिये, मैं ज़िन्दा हूँ।"

भीम का सपना इतना स्पष्ट था कि उसको वह सच-सा ही मालूम हुआ। इसलिए उसने अपनी पत्नी का विश्वास नहीं किया। "नहीं, तुम भूत हो" कहकर कमरे के एक कोने में बैठकर उसने ज़ोर से आँखें मींच लीं। महालक्ष्मी न सोच पाई कि उसका सन्देह कैसे दूर किया जाय!

सबेरा होते ही, भीम अपने कपड़े इकट्ठे करने लगा। "कहाँ जा रहे हैं!" महालक्ष्मी ने पूछा।

"मैं यहाँ नहीं रहूँगा, मैं अपनी दादी के घर चला जाऊँगा।" भीम ने कहा।

"अच्छा, तो जाइये, देख आइये, आपकी दादी का क्या हाल है। किसी से मत कहिये कि आप कहाँ जा रहे हैं।" महालक्ष्मी ने कहा। उसे डर था कि कहीं वह गाँव में यह शोर न करता रहे कि उसकी पत्नी भूत बन गई थी।

भीम बिना किसी से कुछ कहे ही, दादी के घर के लिए निकल पड़ा। क्योंकि उसको कभी सपने न आते थे इसलिए सपना भी उसे सच लग रहा था।

जब अगले दिन ज़मींदार के घर लोग पूछने लगे कि दामाद कहाँ था तो
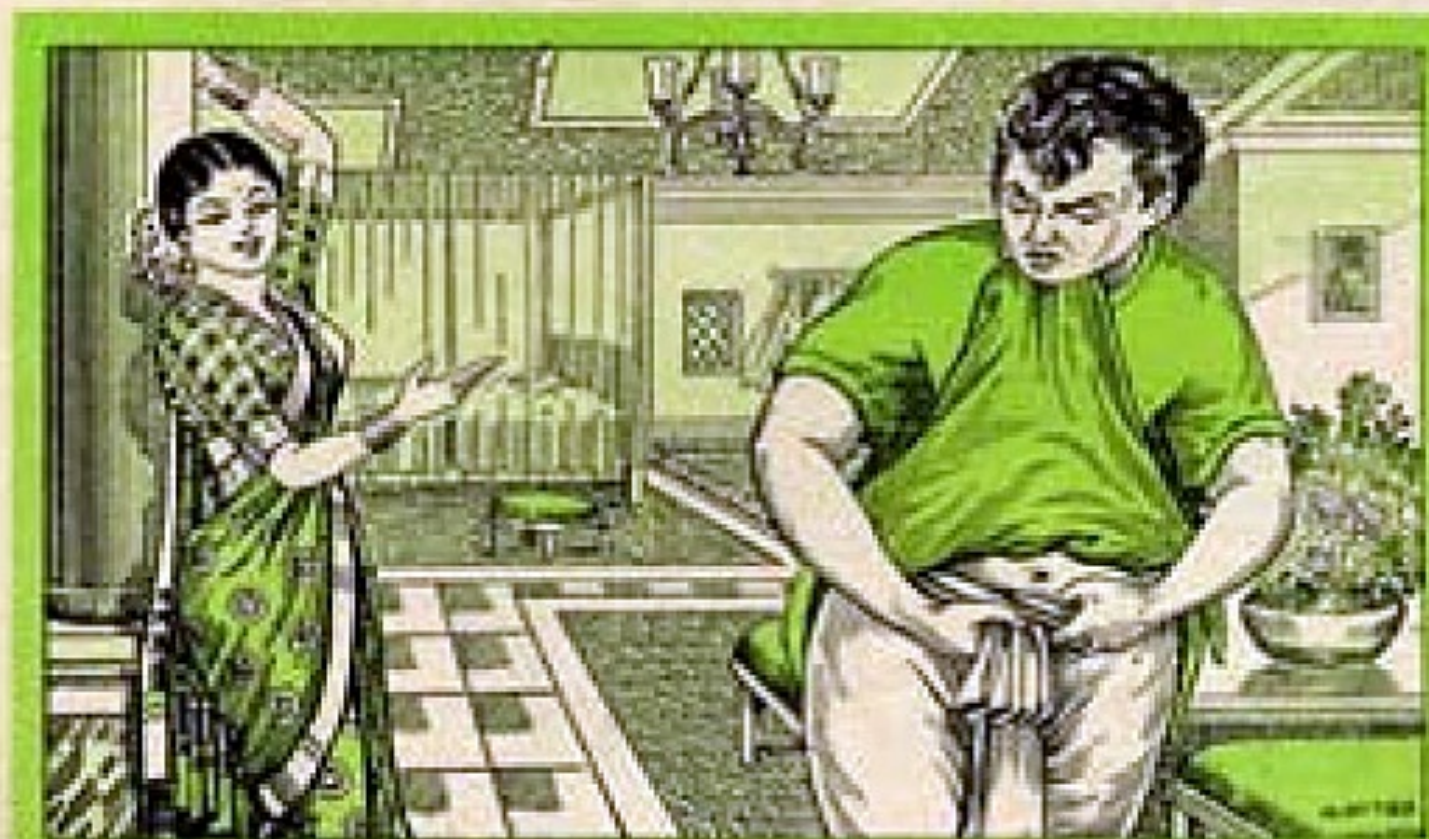
महालक्ष्मी ने कहा—"उन्होंने रात कोई खराब सपना देखा था। एक बार अपनी दादी को देख आने के लिए, वे सवेरे सवेरे ही चले गये हैं।"

दादी के घर जाने के लिए दो दिन लगते थे। इसलिए, दिन भर चलकर, एक सराय में वह सो रहा। उस दिन रात को उसने एक और सपना देखा। उसे सपना आया कि दादी मर गई थी, सब उसके चारों ओर बैठकर रोये थे। उसने ही उसकी अन्त्येष्टिक्रिया की थी। सपने में वह ज़ोर से रोया। "मेरी पत्नी गुज़र गई, मेरी दादी गुज़र गई। अब मैं जीकर क्या करूँगा!" भीम रात में छटपटाने लगा।

भीम उठा। उसने घबराकर चारों ओर देखा। वह श्मशान में न था, सराय में था। उसके कपड़ों पर राख भी न थी। भीम को लगा कि जो कुछ उसने देखा था, शायद वह भ्रम था। इसी सन्देह में भीम घर पहुँचा। दादी जीवित थी। उसने भीम से कुशलप्रश्न किये। उसने उसके आने का कारण पूछा। भीम ने बिना कुछ छुपाये सब कुछ बता दिया।

सब सुनकर दादी ने कहा—"अरे पगले, जो तुम्हारी पत्नी ने कहा है, वही ठीक है, वह सब सपना है। तुम सपने को ही सच समझ बैठे। तुम यह भी नहीं जानते कि सपना किसे कहते हैं। इसलिए, महालक्ष्मी जो कहा करे, वही सुना करो। हर बात पर यों गड़बड़ न किया करो।"

एक दिन दादी का बनाया खाना खाकर, भीम फिर ससुराल आ गया।

[अगले मास एक और घटना]

युक्ति और शक्ति

बड़े लड़के की परीक्षायें पास आ रही थीं, पर वह मेहनत नहीं कर रहा था। यह जानकर बाबा ने कहा—"क्यों भाई, परीक्षायें पास हैं और तुम गधों की तरह घूम रहे हो।"

"पुस्तक पढ़ना, सब बेकार है, बाबा। मुख्य पाठ मैंने रट ही रखे हैं। पिछले साल भी मैं इसी तरह पास हुआ था।" बड़े लड़के ने गर्व के साथ कहा।

"तुम्हें देखकर, तो शेखी मारनेवाले शिकारी की याद आती है। मार खाओगे, समझे। युक्ति असहाय अवस्था में ज़रूर रक्षा करती है, पर वह कभी शक्ति नहीं हो सकती।" बाबा ने कहा।

"शिकारी" यह सुनते ही बच्चे सब भागे-भागे आये। "शेखियाँ क्या बाबा? शिकारी कौन बाबा? कहानी सुनाओ बाबा।" बच्चों ने कहा। बाबा मूँछें ऐंठकर, यों कहानी सुनाने लगा।

कहीं कोई एक शिकारी रहा करता था। वह शिकार में तो खास अच्छा न था, पर जंगली जानवरों की बोली बोलने में बड़ा चतुर था। वह यदि हिरणों के पास जाता, तो हिरणों की तरह बोलता, बाकी हिरण, यह जानकर कि वह सचमुच हिरण ही था, उसके पास आया करते। जब वे पास आते, तो बाण से दो-तीन हिरणों को मार देता।

शिकार तो अलग, वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए भी यही युक्ति करता। जंगल में क्या सब जैसा हम चाहते हैं, वैसा ही होता है? एक बार उसने हरिण

की बोली बोली और भेड़िये भागे भागे आये। यदि भेड़िये उसको छू जाते, तो उसको चीर फाड़कर रख देते। उस समय वह शेर की तरह गरजता। तुरत भेड़िये डरकर भाग जाते। कभी कभी शेर उसकी तरफ आ जाता, तो उसको डराने के लिए वह भालू की तरह चिल्लाता। भालू की आवाज सुनकर शेर पीछे हट जाता। वह शिकारी जो बुद्धि और शक्ति में भेद तक न जानता था, अपने को संसार में सबसे बड़ा शिकारी समझा करता।

पर मालूम है एक दिन क्या हुआ? एक दिन पेड़ के पीछे से उसने हरिण की आवाज की और हरिणों के बदले भेड़िये आये।

भेड़ियों को आता देख शिकारी शेर की तरह गरजा। यह सोच कि पेड़ों के पीछे सचमुच कोई शेर होगा, भेड़िये भाग गये। परन्तु शेर की आवाज सुनकर एक शेर उस तरफ आया। "अरे, बाप रे बाप...." कहकर शिकारी भालू की तरह बोला। यह सुन शेर पीछे हट गया।

परन्तु एक ओर से दो भालू आये। वह न जान सका कि उनको डराने के लिए क्या करे, इसलिए उसने वहाँ से भाग जाना चाहा। पर भालू क्या उसे छोड़ते? उसे पकड़कर उन्होंने चीर फाड़ दिया। यदि वह सचमुच अच्छा शिकारी होता तो चाहे हरिण आवे या शेर आवे, भालू आवे, बहादुरी से उसे मार देता। क्या उससे बचने के लिए यों युक्तियाँ करता?

बाबा ने यह कहानी सुनाकर बड़े लड़के से कहा—"अरे बेटा, अभी ही पिछले साल यह चलके पास हो गये हो, पर अब से शक्ति लगाकर पास होना सीखो।"

अरण्य काण्ड

पेड़ पौधों को काटकर, रास्ता बनाते हुए, राम लक्ष्मण, जन स्थान पार करके तीन कोस दूर जाकर, क्रौन्चारण्य में प्रविष्ट हुए। वे रास्ते में, जगह जगह आराम करते, सीता को खोजते, क्रौन्चारण्य पार करके, मातंगाश्रम के पास पहुँचे। वहाँ एक बड़ी गुफा देखी। उस गुफा में अन्धकार था।

राम लक्ष्मण, ज्यों ही उस गुफा के पास गये, त्यों ही उनको एक बड़ी भद्दी, राक्षसी दिखाई दी। उसको देखते ही मामूली लोग डर जाते थे। घिनौनी-सी शक्ल थी। बड़ा-सा मुख, बड़ी आँखें, बड़ा पेट, बड़े बड़े दान्त, खुरदरा चमड़ा। वह राक्षसी शेर चीतों को चीर फाड़कर खाती। राम लक्ष्मण को देखते ही वह उनके पास गई। उसने लक्ष्मण को पकड़ लिया।

उसने लक्ष्मण से कहा—"मेरा नाम अयोमुखी है। इतने दिन बाद तुम मन भाये मुझे मिले हो। हम दोनों, आओ शादी करलें और सारे जंगल में घूमें फिरें। चलो, मेरे साथ आओ।" लक्ष्मण को गुस्सा आ गया। उसने तलवार निकालकर उसके कान और नाक काट दिये। वह राक्षसी पहिले ही भौंडी थी।

जब और भयंकर हो गई और चीखती चिल्लाती भाग गई।

इसके बाद, वे दोनों जंगल में सीता को जगह जगह खोजते रहे। इतने में भयंकर शब्द हुआ और चारों दिशायें गूँज उठीं। राम, लक्ष्मण, जिस तरफ़ से ध्वनि आयी थी, उस तरफ़ गये और उन्होंने एक पेड़ के नीचे विचित्र आकृति को देखा।

वह आकृति एक छोटी पहाड़ी जितनी बड़ी थी, काली थी। उसके न सिर था, न गला, न पैर ही। वक्षस्थल में एक बड़ी आँख चमक रही थी। उसके नीचे पेट में एक बड़ा मुख था। उस ठूँठ-सी आकृति के बड़े बड़े हाथ अवश्य थे।

वह आश्चर्यजनक रूप कबन्ध राक्षस का था। एक ही जगह रहकर, वह अपने बड़े बड़े हाथों से, दूर दूर से मनुष्यों और जन्तुओं को बटोरता और उनको जीवित खा जाता।

राम लक्ष्मण के पास आते ही वह एक एक हाथ में, राम और लक्ष्मण को पास घसीटने की कोशिश करने लगा। राम और लक्ष्मण के पास जितना ही बल
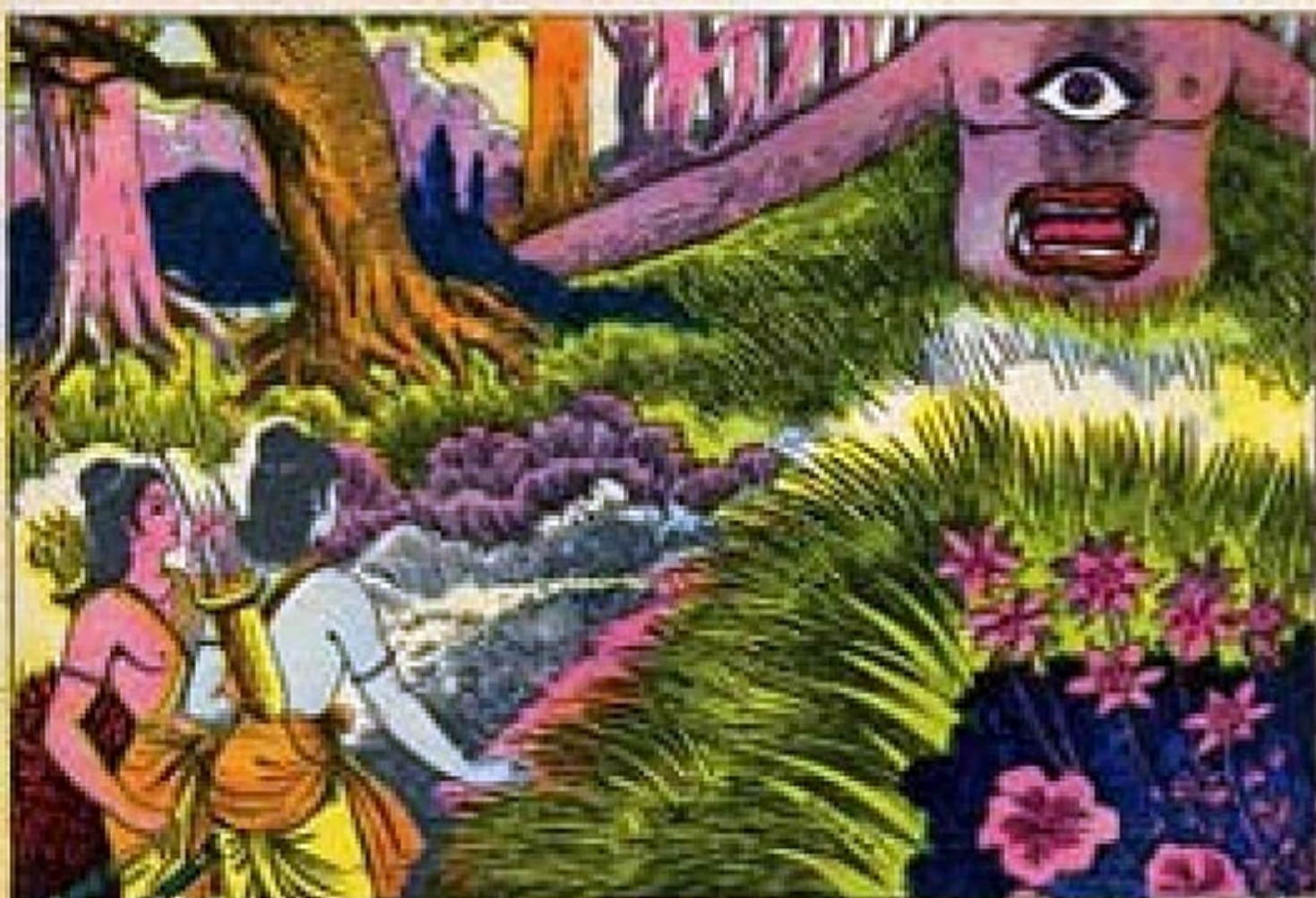
था, जितने ही हथियार थे। पर वे उसकी पकड़ न छुड़ा पाये।

“भाई, मुझे, यहाँ बलि होने दो, तुम अपने को बचा लो और सीता को खोजो।” लक्ष्मण ने कहा।

राम ने लक्ष्मण को ढाढ़स दिया। इतने में, कबन्ध ने भयंकर स्वर में कहा—“तुम दोनों बड़े मोटे ताजे मालूम होते हो, तुम्हें न छोड़ूँगा, मेरे मुख में जाकर रहोगे।”

ये बातें सुनते ही राम का मुख भय के कारण सूख गया। एक क्षण पहिले ही उन्होंने लक्ष्मण को ढाढ़स दिया था, पर वे अब स्वयं भयभीत से थे। “हमारे दिन अच्छे नहीं मालूम होते। कष्ट ही कष्ट है। शायद हमारी इतनी बुरी तरह मौत होगी। समय हो जाने पर क्या बड़े बड़े वीर रणभूमि में नहीं मर रहे हैं?”

इतने में लक्ष्मण को जोश आ गया। उसने राम से कहा—“यह अब हमें खाने जा रहा है। इसका सारा बल हाथों में ही है, चलो इसके हाथ काट दें।

कबन्ध ने जब ये बातें सुनीं, तो गुस्से में उसने उन दोनों को निगलना चाहा।

ठीक इसी समय राम ने उसका दाहिना हाथ और लक्ष्मण ने बाँया हाथ काट डाला। तब कबन्ध ज़ोर से चिल्लाता नीचे गिर गया।

उसने राम लक्ष्मण से पूछा—"तुम कौन हो?" लक्ष्मण ने उसको अपने बारे में बताकर पूछा—"तुम कौन हो इस विचित्र आकृति में? इस जंगल में तुम क्यों हो?"

"तो तुम दोनों राम लक्ष्मण हो। इस जंगल में मेरा आना अच्छा हुआ। मैं अपनी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" यह कहते हुए उसने अपना वृत्तान्त सुनाया। एक समय यह कबन्ध कभी इन्द्र को भी मात करता था। परन्तु वह भयंकर रूप धारण करके वन में मुनियों को डराया करता।

एक बार स्थूलशिर नामक महामुनि ने उससे कहा—"तुम्हारा यह रूप ही शाश्वत हो जावे।" तब इस कबन्ध ने, मुनि से क्षमा माँगी और पूछा कि कैसे वह इस शाप से विमुक्त हो सकेगा।

मुनिने कहा—"जब राम वन आयेंगे और तेरे हाथ काट देंगे और तेरी दहन किया करेंगे, तब तुम्हारा पूर्व रूप फिर आ जायेगा।" यह कहकर मुनि चला गया।

स्थूल शिर का यह शाप बड़े विचित्र ढंग से पूरा हुआ। शाप से पहिले ही, कबन्धने ब्रह्मा की कठिन तपस्या की थी। ब्रह्मा ने उसकी तपस्या पर सन्तुष्ट होकर उसको लम्बी आयु दी। "ब्रह्मा ने क्योंकि मुझ को लम्बी आयु दी है, इसलिए अब देवेन्द्र भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" यह सोचकर उसने इन्द्र को युद्ध के लिए ललकारा।

इन्द्र ने वज्र से उसके सिर और पैरों को उसके शरीर में ठोंस दिया।

अब इस रूप में कैसे जिया जाय? इसलिए उसने इन्द्र से बहुत प्रार्थना की कि वह उसके प्राण ले ले। "ब्रह्मा ने तुम्हें लम्बी आयु दी हुई है, इसलिए मैं तुम्हारे प्राण कैसे ले सकता हूँ! मैं यह काम नहीं करूँगा।" इन्द्र ने कहा।

"खाने के लिए अब मुख भी न रहा, मैं कैसे अधिक समय तक जीऊँगा!" कबन्ध ने पूछा।

तब इन्द्र ने उसको बड़े बड़े हाथ दिये। पेट में, तेज दान्तोंवाला मुख रखा। वह ठूँठ-सा हो गया। मुनि का शाप पूरा हुआ। इसके बाद कबन्ध वहीं रह गया और हर तरह के प्राणियों को बटोरकर खाने लगा।

कबन्ध के इस कहानी के सुनाने पर राम ने कहा—"मेरी पत्नी सीता को, रावण उठा ले गया है। मैं उसका नाम तो जानता हूँ पर मुझे यह नहीं मालूम कि वह कौन है और कहाँ रहता है। उसकी क्या ताकत है, कैसा है, यह भी नहीं जानता हूँ।

सीता को खोजने के हमारे इस अभियान में तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए।"

इस पर कबन्ध ने कहा—"इस समय मेरे पास कोई दिव्य ज्ञान नहीं है। यदि आपने मुझे जला दिया, तो मेरा निज स्वरूप फिर मुझे मिल जायेगा। तब मैं आपकी सहायता कर सकूँगा। शायद दे सकूँगा...."

राम लक्ष्मण ने एक जगह एक चिता बनाई, उस पर कबन्ध को रखकर, उसे जला दिया। थोड़ी देर में, उस चिता में से एक दिव्य पुरुष स्वच्छ वस्त्र पहिनकर, बहुत से आभरण पहिने निकला। उसने हंसों के विमान में सवार होकर आकाश में उड़ते हुए, राम से कहा—

"राम, सीता को फिर से पाने के लिए एक व्यक्ति तुम्हारी मदद कर सकता है। वह भी तुम्हारी तरह राज्य खोकर, बड़े भाई के भय के कारण, पम्पा सरोवर के पास ऋष्यमूक पर्वत पर, चार अनुचरों के साथ रह रहा है। वह सुग्रीव नाम का वानर राजा है। वाली का छोटा भाई है। वह पराक्रमशाली है, सत्यभाषी है। समर्थ है। सीता को खोजने में वह मदद कर सकता है। तुम उसके पास पहिले जाओ, अग्नि का प्रमाण करके उससे मैत्री करो। जो कुछ सहायता वह मांगे, करो और उससे सहायता मांगो। उसके सैनिक वानर, जरूर मालूम कर लेंगे कि सीता कहाँ है।" कबन्ध यह कहकर, ऋष्यमूक का मार्ग बताकर अपने मार्ग पर चला गया।

सुग्रीव से मिलने के लिए राम और लक्ष्मण, पम्पा सरोवर की ओर गये। वे अगले दिन पम्पा सरोवर के पश्चिमी तट पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने शबरी का सुन्दर आश्रम देखा।

उस आश्रम में मातंग महामुनि रहा करते थे। उनके पास तपस्वी शिष्य थे। शबरी नाम की सन्यासिनी, उन शिष्यों की सेवा करती, वहाँ रहा करती थी। राम जब चित्रकूट आये, तो मातंग के शिष्यों ने ऐहिक जीवन समाप्त करके स्वर्ग जाते हुए कहा—"राम तुम्हारे आश्रम में आ सकते हैं, उनका अतिथि सत्कार करके, पुण्य लोक जाओ।" उनके चले जाने के बाद बुढ़िया शबरी, राम की प्रतीक्षा करती, उनके लिए जंगली फल इकट्ठा करके रखती जा रही थी।

शबरी ने राम लक्ष्मण को नमस्कार करके यह बात बतायी। राम की इच्छा पर, उसने अपना सारा तपोवन राम को दिखाया। वहाँ मुनियों ने अपनी तपस्या के कारण सात समुद्र बना लिए थे। उनकी यज्ञवेदिका भी सुरक्षित थी। वे पुष्प मालायें, जो कभी मुनियों ने बनाई थीं, अब भी बिना मुरझाये वैसी ही थीं। यह आश्चर्य देखने के बाद शबरी ने राम से कहा—"मैं अब यह देह छोड़कर, अपने मान्य महामुनियों के पास चली जाऊँगी।" फिर वह अग्नि में प्रवेश करके ऊर्ध्व लोक की ओर चली गई।

राम ने सब देखा। सात समुद्रों में स्नान करके, तर्पण करने के बाद मन: शान्ति मिली। भविष्य के बारे में उनको आशा होने लगी। वे लक्ष्मण के साथ आश्रम से पम्पा सरोवर गये। राम ने उसमें स्नान करके लक्ष्मण से कहा—"लक्ष्मण! यहीं पास ही ऋष्यमूक पर्वत पर कहीं सुग्रीव रहता है। तुम उसके पास जाओ।"

[अरण्यकाण्ड समाप्त]
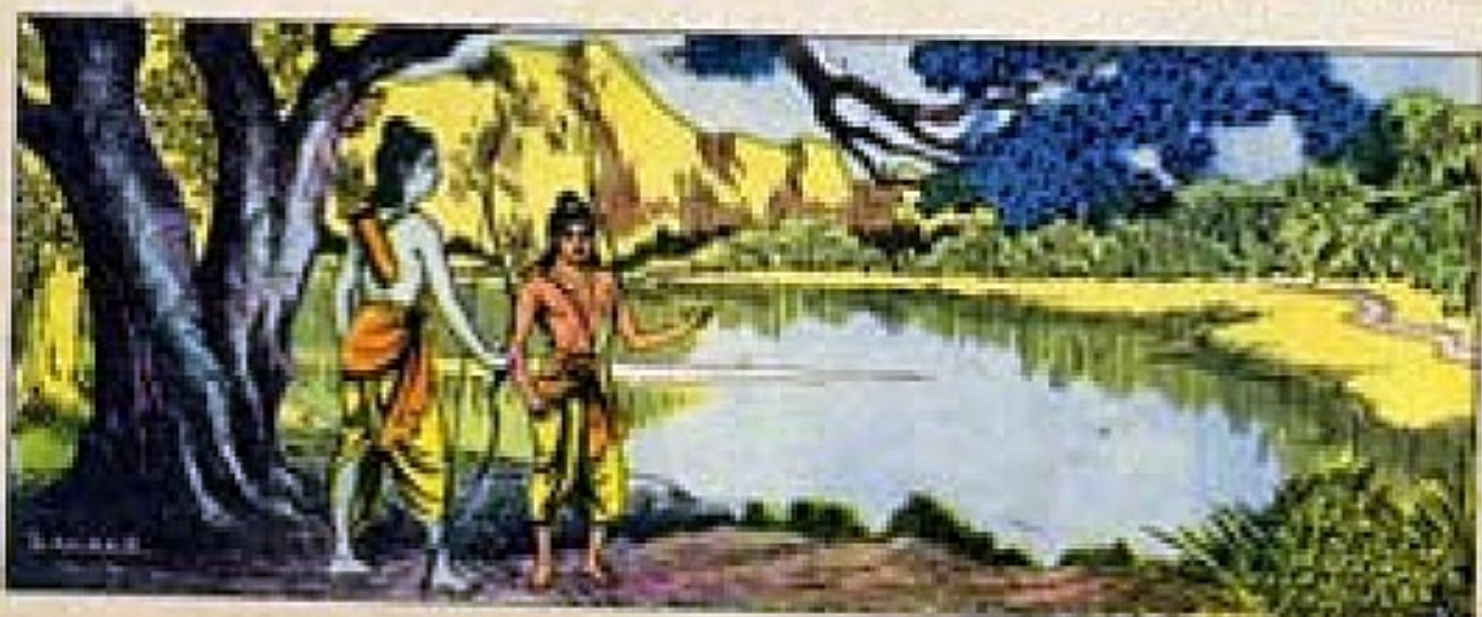
१६. ग्रेट स्फिन्क्स

यह संसार में सब से बड़ी पत्थर की बनी मूर्ति है। यह संसार की मूर्तियों में सब से पुरानी भी है।

यह शायद ५०००, वर्ष पुरानी है। १८९ फीट ऊँची यह मूर्ति सम्भवतः किसी चट्टान को काटकर बनाई गई है। इसके अगले पैर ही अलग पत्थर से बनाये गये हैं। इसका शरीर शेर का है, सिर मनुष्य का है। यह सिर सम्भवतः मिस्र देश के राजा (फराओ) का है। इस शेर की लम्बाई २४० फीट है। शरीर की ऊँचाई ६६ फीट है। इसके पैर रेत में दब गये हैं। रेगिस्तान की आंधी में, कहा जाता है, रेत इसके गले तक आ जाती थी। मिस्र में जब मुसलमानों ने आक्रमण किया, तो उन्होंने यह सोचकर कि यह किसी देवता का मुँह होगा, इसको तोड़ने का प्रयत्न किया। मिस्र की सरकार ने इसकी ऐतिहासिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए रेत को हटवाया, और इसकी मरम्मत भी करवाई। आज के संसार के आश्चर्यों में यह भी एक है।
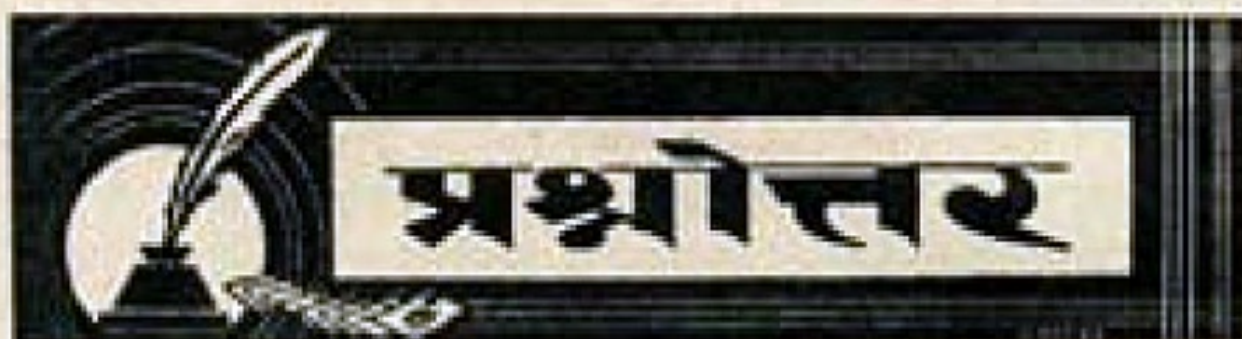
१. रजनी रंजन सहाय, पटना

क्या आप होली विशेषांक भी निकालते हैं ?

जी नहीं ।

२. गुलाबचन्द्र पेंढकर, अकोला

क्या आपके पास वर्षों पुराने चन्दामामा हैं ?

हैं, मगर बिक्री के लिए नहीं ।

३. कृष्णचन्द्र, यमुनानगर

क्या आप "चन्दामामा" अंग्रेज़ी में छापना शुरू करेंगे ?

अभी तो कोई इरादा नहीं है ।

४. सुधीर कुमार घोष, मुज़फ्फरपुर

क्या आप "रामायण" के समाप्त होने पर उसे पुस्तक के रूप में भी छापेंगे ?

अभी कुछ नहीं कह सकते । समाप्त तो होने दीजिये ।

५. सुशील कुमार घोष, मुज़फ्फरपुर

क्या आप शेक्सपीयर की प्रसिद्ध कृति "दि मर्चेन्ट आफ वेनिस" व "दि मिडसमर नाइट्स ड्रीम" छाप सकते हैं ?

इनको कहानी रूप हम छाप चुके हैं ।

६. **अशोक कुमार गोयल, बम्बई**

आप जो चन्दामामा के अन्दर इतने इश्तहार छापते हैं, उनके बदले में कोई चुटकले या छोटी कहानियाँ क्यों नहीं छापते ?

आप देखेंगे कि "चन्दामामा" में पाठ्य सामग्री के पृष्ठ निर्धारित हैं, चाहे हम कितने ही इश्तहार लें, हम वे पृष्ठ कम नहीं करते। क्या आप कहानियों के बदले चुटकले चाहेंगे !

७. **परशुराम तिवारी, गोरखपुर**

"चन्दामामा" में प्रकाशित हो रहा रामायण कब तक प्रकाशित होता रहेगा ?

आशा है, जब तक रामायण खतम नहीं होगी।

८. **प्रभुदास शेठ, वाराणसी**

क्या "चन्दामामा" पाक्षिक पत्रिका नहीं हो सकती ?

अभी तो नहीं, कहीं ऐसा न हो कि आप एक में अमावास्या देखें और दूसरे में पूर्णिमा।

९. **कान्तिदास नायक, बिलासपुर**

क्या आप "चन्दामामा" में भयंकर घाटी व रामायण चित्रों के समान अन्य चित्र भी बहुरंगीन नहीं दे सकते ?

सब यदि बहुरंगीन कर दिये गये, तो हम इन चित्रों की विशेषता कैसे दे पायेंगे ! फिर खर्च का भी सवाल है। अधिक रंग के अर्थ हैं, अधिक खर्च।

१०. **शैलेन्द्र गोपाल गुप्ता, लखनऊ**

क्या आपने "चन्दामामा" के मूल्य में वृद्धि करने के साथ साथ उसके पृष्ठों में भी वृद्धि करने की सोची है ?

वृद्धि इसलिए की गयी है क्योंकि वर्तमान अंक को वर्तमान मूल्य पर देना, हमारे लिए सम्भव नहीं है। कारण है, मुद्रण सामग्री की मँहगाई और पर्याप्त मात्रा में कागज का यथा समय न मिलना। इस हालत में हम भला पृष्ठ कैसे बढ़ा सकते हैं !

Photo by E. Ramalingam

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

विशाल काय भोजन दुर्लभ !

प्रेषक :
ईश्वरशरण-नई दिल्ली

Photo by K. N. Mullee

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

लघु जीवन भोजन सुलभ !!

प्रेषक :
ईश्वरशरण-नई दिल्ली

सहवास दोष ★

[रामतीर्थ कथा]
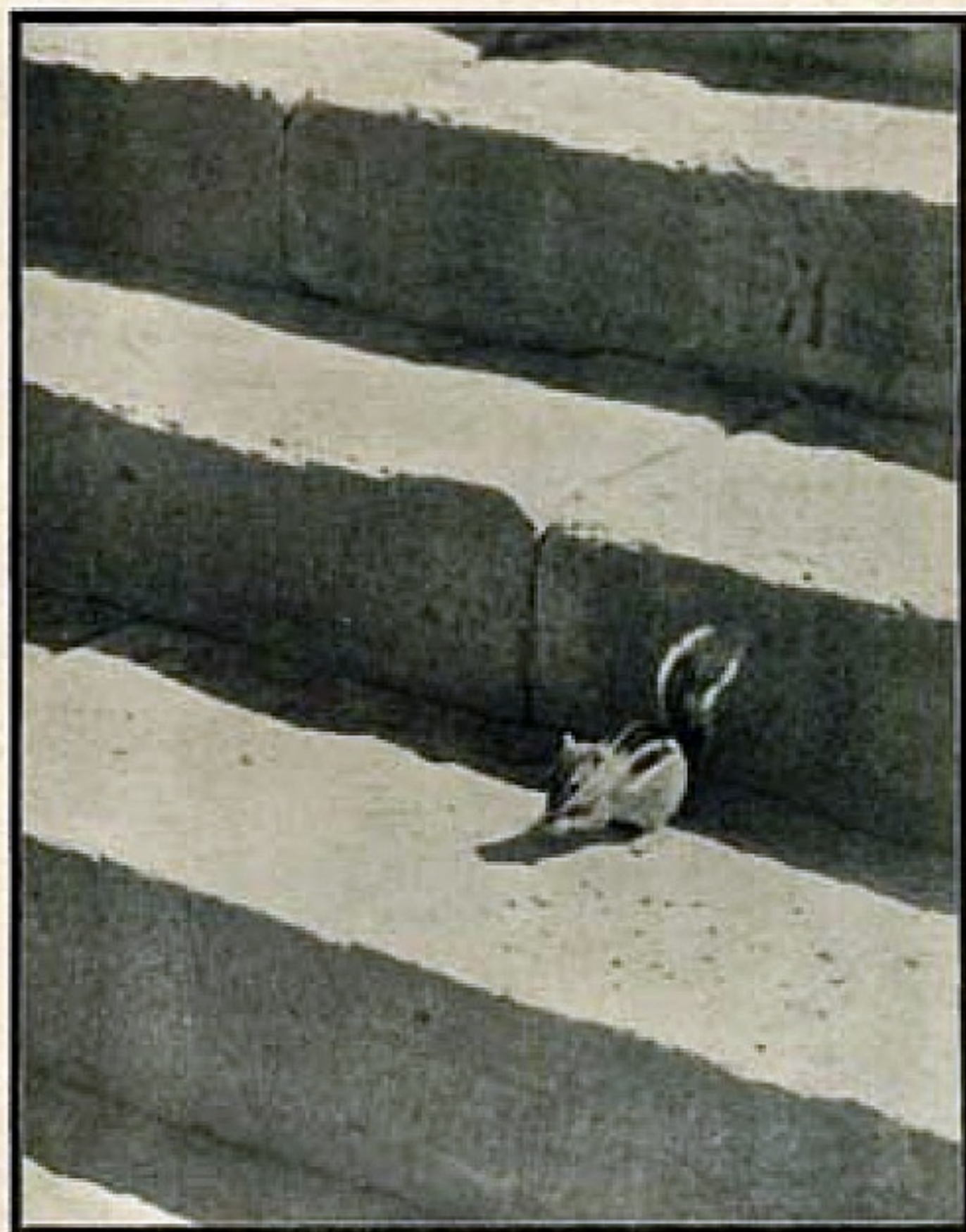
एक जगह एक कुत्ता और एक बिल्ली रहा करते थे। वे दोनों बड़े ही दोस्त थे, पर दोनों का स्वभाव अलग अलग था। वे एक दूसरे की हरकतों को देखकर हमेशा आश्चर्य किया करते।

एक बार कुत्ते ने एक ज्ञानी के पास जाकर कहा—"स्वामी, यह बिल्ली बड़ी खराब है। यह बड़ी चोर है, यह अगले जन्म में किस रूप में पैदा होगी?"

उसी प्रकार बिल्ली ने भी ज्ञानी के पास जाकर पूछा—"स्वामी, यह कुत्ता बड़ा गुस्सैल है। जिस किसी को देखता है, उसी पर गुर्राने लगता है। अगले जन्म में, यह किस रूप में पैदा होगा?"

ज्ञानी ने पहिले तो इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया, परन्तु कुत्ता और बिल्ली रोज ये ही प्रश्न पूछने चले आते इसलिए स्वामी ने उनसे कहा—"अच्छा है, तुम ये प्रश्न न किया करो। फिर भी तुम जानना चाहते हो, इसलिए बता रहा हूँ। क्योंकि यह कुत्ता हमेशा बिल्ली की हरकतों को देखता रहता है, इसलिए अगले जन्म में यह बिल्ली बनेगा और उसी तरह बिल्ली कुत्ते के रूप में पैदा होगी।"